Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

هُوَالَّذِیۡ جَعَلَ لَکُمُ الَّیۡلَ لِتَسۡکُنُوۡا فِیۡہِ وَالنَّہَارَ مُبۡصِرًا ؕ اِنَّ فِیۡ ذٰلِکَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوۡمٍ یَّسۡمَعُوۡنَ

(सूरः यूनुस : 68)

अनुवाद : वही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम इस में संतोष पाओ और दिन को रोशन करने वाला बनाया। निसन्देह इस में ऐसे लोगों के लिए बहुत से निशानात हैं जो (बात) सुनते हैं।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 9
अंक - 22

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 600 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

21 शवाल, 12 जुल्कादह 1445 हिज्री कमरी, 30 हिज्रत 1403 हिज्री शम्सी, 30 मई 2024 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

ख़ुत्बः जुमअः

उस ज़ात की क़सम है जिसके क़बज़ा में मेरी जान है कि अगर वह मदीना पर हमला-आवर हुए तो उनके लिए ऐसे पत्थरों को निशान लगा दिए गए हैं जिन की बारिश से उनका इस तरह नाम-ओ-निशान मिट जाएगा जैसे गुज़रा हुआ कल होता है (अल् हदीस)

हमारे जितने आदमी आज शहीद हुए हैं अल्लाह तआला ने इन सबको जन्नत में इकट्ठा कर रखा है और सब ने अल्लाह तआला से दुआ की कि हे ख़ुदा हमारे पीछे रहने वालों की ख़बर-गीरी रखियो (अल् हदीस)

ग़ज़्व-ए-उहद और ग़ज़्व-ए-हमराउल असद से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पवित्र सीरत का ईमान अफ़रोज़ वर्णन

मशरिक़-ए-वुसता में बिगड़ती हुई सूरत-ए-हाल की पृष्ठभूमि में दुआ की तहरीक

अल्लाह तआला दुनिया के इन लीडरों को भी अक़ल दे जो विश्वयुद्ध को हवा देने की मज़ीद कोशिश कर रहे हैं और मुस्लिम उम्मत को भी समझ और अक़ल दे और उनको तौफ़ीक़ दे कि वे एक बन कर फिर अपने मुक़ाबिल का सही तरह मुक़ाबला कर सकें और हिक्मत अपना सकें

मौलाना ग़ुलाम अहमद नसीम साहिब मुरब्बी सिलसिला, साबिक़ प्रोफ़ैसर जामिआ अहमदिया रब्वाह और डाक्टर एहसानुल्लाह ज़फ़र साहिब साबिक़ अमीर जमात अहमदिया अमरीका की वफ़ात पर उनका वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 19 अप्रैल 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

जंग-ए-उहद के वाक़ियात के ज़िमन में कुछ और वाक़ियात पेश हैं जिस से आँ-हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत के ख़ूबसूरत पहलूओं का मज़ीद पता चलता है।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि हज़रत अब्दु-ल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो जब फ़ौत हुए तो उन पर क़र्ज़ था। मैं ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मदद तलब की कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके क़र्ज़-ख़्वाहों को समझाएँ कि वे उनके क़र्ज़ में से कुछ कमी कर दें तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे इस ख़ाहिश का इज़्हार किया परंतु क़र्ज़ देने वालों ने कमी नहीं की। तब नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे फ़रमाया कि जाओ और अपनी ख़जूरों की हर एक किस्म को अलग-अलग रखो। मुख़्तलिफ़ किस्म की खजूरें हैं उनके अलग-अलग ढेर लगाते जाओ। कहते हैं अजवा खजूर की किसम को अलैहदा रखना और इज़्क़ बिन ज़ैद खजूर की किसम को अलैहदा। फिर मुझे पैग़ाम भेजना। इसलिए मैं ने ऐसा ही किया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम को कहला भेजा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़जूरों के ढेर पर या उनके दरमयान बैठ गए। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उन लोगों को माप कर दो। इसलिए मैं ने उनको माप कर दिया यहां तक कि जो उनका हक़ था मैं ने उनको पूरा दे दिया फिर भी मेरी खजूरें बच गईं। ऐसा मालूम होता था कि उनमें कुछ कमी नहीं हुई।

(सही बुख़ारी किताबुल बुयू बाब अल् कील अल् बाए वल् मौअती हदीस 2127)

आँहज़रत सल्लल्लाहो वसल्लम ने उहद के शहीदों के लिए दुआ की कि हे ख़ुदा उहद के शहीदों के पीछे रहने वालों के लिए अच्छे ख़बरगीरी पैदा फ़र्मा। इस की तफ़सील वर्णन फ़रमाते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत माज़ रज़ियल्लाहु अन्हु की बूढ़ी और नज़र की कमज़ोर माता का वर्णन किया जो पहले भी

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

वर्णन हो चुका है जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इशक़ में मदीना से बाहर निकल आई थी। जिसकी तफ़सील जैसा कि मैं ने कहा पिछले ख़ुत्बा में वर्णन हो चुकी है। यह तफ़सील वर्णन फ़रमाने के बाद आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी सवारी रुकवा कर जब बुढ़िया को देखा तो बुढ़िया से उनके बेटे की शहादत का अफ़सोस किया। आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि इन वाक़ियात पर ग़ौर करो और देखो कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कितना ज़्यादा एहसास था कि जिस किसी को तकलीफ़ पहुँचती है उस के साथ हमदर्दी की जाए। इस के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस बुढ़िया से फ़रमाया तुम भी ख़ुश हो और दूसरी समस्त बहनों को भी जिनके रिश्तेदार लड़ाई में शहीद हो गए हैं यह ख़ुशख़बरी सुना दूँ कि :

हमारे जितने आदमी आज शहीद हुए हैं अल्लाह तआला ने इन सबको जन्नत में इकट्ठा रखा है और सबने अल्लाह तआला से दुआ की कि हे ख़ुदा हमारे पीछे रहने वालों की ख़बर-गीरी रखियो

ये बताने के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुद भी दुआ की कि हे ख़ुदा उहद के शहीदों के पीछे रहने वालों के लिए अच्छे ख़बरगीर पैदा फ़र्मा। इस से मालूम होता है कि किस तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना में दाख़िल होने से पहले ही उहद के शहीदों के पीछे रहने वालों की दिलजोई फ़रमाई और उनके साथ हमदर्दी का इज़हार किया और बावजूद उसके कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़ख़्मी हो चुके थे, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अज़ीज़ तरीन रिश्तेदार शहीद हो गए थे और आपके अज़ीज़ तरीन सहाबा फ़ौत हो गए थे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बराबर क़दम ब क़दम मदीना के लोगों की दिलजोई फ़र्मा रहे थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपनी तकलीफ़ का ज़र्रा भी एहसास नहीं था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सिवा ऐसा कोई शख़्स नहीं हो सकता जो इतनी तकलीफों, इतने दुखों और इतनी मुसीबत के वक़्त दूसरों के साथ हमदर्दी का इज़हार करे। ऐसे वक़्त में तो लोग किसी के साथ बात करने के भी रवादार नहीं होते जबकि वे किसी के साथ हमदर्दी करें।

(उद्धृत मसायब के नीचे बरकतों के खज़ाने मख़फ़ी होते हैं,अनवारुल उलूम भाग 19 पृष्ठ 57-58)

फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक और दुआ का वर्णन मिलता है जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक शहीद की विधवा को दी। वह दुआ थी कि मैं अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ कि ख़ुदा तआला तुम्हारे ख़ावंद से बेहतर ख़बर-गीरी करने वाला कोई शख़्स पैदा कर दे। इसकी तफ़सील वर्णन फ़रमाते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने लिखा है कि "रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए उहद की जंग एक निहायत सब्र-आज़मा जंग थी इस से पहले कभी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर क़ातिलाना हमला नहीं हुआ था और न केवल यह कि जंग-ए-उहद में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर हमला ही हुआ और न केवल यह कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाअज़ दाँत भी टूट गए और न केवल यह कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़ख़्मी हो गए बल्कि दुश्मन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बे-होशी की हालत में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ऊपर से और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथियों के ऊपर से उनके जिस्मों को रौंदता हुआ गुज़रा और यह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी में अपनी किस्म की पहली मिसाल थी परंतु इस जंग में भी हम देखते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किस तरह बुलंद हौसलगी और अपने आला अख़लाक़ का उदाहरण पेश किया और लोगों के साथ हमदर्दी और दिल-जोई की। इस जंग के हालात से पता चलता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अख़लाक़ के कितने बुलंद तरीन मुक़ाम पर खड़े थे और इस जंग में सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की अदीमुल्मिसाल क़ुर्बानियों का भी पता चलता है।" आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "मैं उस वक़्त की बात कर रहा हूँ जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जंग ख़त्म होने पर मदीना वापस तशरीफ़ ला रहे थे। मदीना की महिलाएं जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शहादत की ख़बर सुन कर सख़्त बेक़रार थीं अब वे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आमद की ख़बर सुन कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस्तिक़बाल के लिए मदीना से बाहर कुछ फ़ासले पर पहुंच गई थीं उनमें आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक साली ज़ैनब बिंत जह्श भी थीं उनके तीन निहायत क़रीबी रिश्तेदार जंग में शहीद हो गए थे।"

यहां वज़ाहत यह कर दूं कि अनवारुल उलूम में यह जो वाक़िया लिखा है या लिखने वाले ने लिखा या आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस तरह ही वर्णन किया लेकिन नाम में कुछ भूला है। हज़रत ज़ैनब बिंत जह्श तो हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र पत्नी थीं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की साली अर्थात बहन निसबती का नाम हज़रत हुम्ना बिंत जह्श था जो हज़रत मसअब बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु की पत्नी थीं। बहरहाल जहां-जहां यह नाम की ग़लती है इस को मैं आगे दरुस्त करता जाऊँगा, उनका असल नाम हुम्ना।

"रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब उन्हें देखा तो फ़रमाया अपने मुर्दे का अफ़सोस करो। (यह अरबी ज़बान का एक मुहावरा है जिसके अर्थ ये होते हैं कि मैं तुम्हें ख़बर देता हूँ कि तुम्हारा अज़ीज़ मारा गया है।) "तो "हुम्ना बिंत जहश रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! किस मुर्दे का अफ़सोस करूँ? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हारा मामूं हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद हो गया है। यह सुनकर हज़रत हुम्ना रज़ियल्लाहु अन्हा ने इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन पढ़ा और फिर कहा अल्लाह तआला उनके मदारिज बुलंद करे वह कैसी अच्छी मौत मरे हैं। इस के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अच्छा अपने एक और मरने वाले का अफ़सोस कर लो। हुम्ना रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! किस का? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हारा भाई अबदुल्लाह बिन जहश रज़ियल्लाहु अन्हु भी शहीद हो गया है। हुम्ना रज़ियल्लाहु अन्हा ने फिर इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन पढ़ा और कहा अलहमदु लिल्लाह वह तो बड़ी ही अच्छी मौत मरे हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फिर हुम्ना रज़ियल्लाहु अन्हा अपने एक और मुर्दे का अफ़सोस करो। उसने पूछा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! किस का? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तेरा ख़ावंद भी शहीद हो गया है। ये सुनकर हुम्ना रज़ियल्लाहु अन्हो की आँखों से आँसू रवां हो गए और उसने कहा अफ़सोस! यह देखकर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया देखो औरत को अपने ख़ावंद के साथ कितना गहरा ताल्लुक़ होता है। जब मैं ने हुम्ना रज़ियल्लाहु अन्हा को उसके मामूं के शहीद होने की ख़बर दी तो उसने पढ़ा इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। जब मैं ने उसे उसके भाई के शहीद होने की ख़बर दी तो उसने फिर भी इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊनही पढ़ा लेकिन जब मैं ने उस के पति के शहीद होने की ख़बर दी तो उसने एक आह भर कर कहा हाय अफ़सोस और वह अपने आँसूओं को रोक न सकी और घबरा गई। फिर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : औरत को ऐसे वक़्त में अपने अज़ीज़ तरीन रिश्तेदार और ख़ूनी रिश्तेदार भूल जाते हैं लेकिन उसे मुहब्बत करने वाला पति याद रहता है। इसके बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुम्ना रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा। तुमने अपने पति की वफ़ात की ख़बर सुनकर हाय अफ़सोस क्यों कहा था? हुम्ना रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया हे अल्लाह के रसलूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझे उस के बेटे याद आगए थे कि उनकी कौन रखवाली करेगा? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया :

मैं अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ कि ख़ुदा तआला उनकी तुम्हारे पति से बेहतर ख़बर-गीरी करने वाला कोई शख़्स पैदा कर दे

इसलिए इसी दुआ का यह नतीजा था कि हुम्ना रज़ियल्लाहु अन्हा की शादी हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ हुई और उनके हाँ मुहम्मद बिन तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो पैदा हुआ परंतु तारीख़ों में वर्णन आता है कि हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो अपने बेटे मुहम्मद के साथ इतनी मुहब्बत और शफ़क़त नहीं करते थे जितनी कि हुम्ना रज़ियल्लाहु अन्हा के पहले बच्चों के साथ। और लोग ये कहते थे कि किसी के बच्चों को इतनी मुहब्बत से पालने वाला तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो से बढ़कर और कोई नहीं और यह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआ का नतीजा था।"

(मसायब के नीचे बरकतों के खज़ाने मख़फ़ी होते हैं, अनवारुल उलूम भाग 19 पृष्ठ 55 से 57)

(ओसोदुल गाबा भाग 7 पृष्ठ 71 प्रकाशन आलेमुल कुतुब इल्मिया बैरूत)

फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने इसी वाक़िया का इस तरह वर्णन फ़रमाया है कि "आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब हुम्ना बिंत जहश रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ हमदर्दी का इज़हार किया और फिर फ़रमाया देखो! एक औरत का अपने मुहब्बत करने वाले पति के साथ कितना गहरा ताल्लुक़ होता है तो इससे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह अर्थ था कि मर्दों को चाहिए कि वह औरतों के साथ हुस्न-ए--सुलूक किया करें।" यह मर्दों के लिए उमूमी सबक़ है कि वे औरतों से हुस्न-ए-सुलूक किया करें "और मामूली मामूली बातों पर उनको मारने और कूटने न लग जाया करें।" यह बहाना बना लेते हैं कि हमें मारने की इजाज़त है। आजकल भी उनसे यह होता है बल्कि हुस्न-ए-सुलूक करना चाहिए। फ़रमाया कि "जब उनकी महिलाएं अपने अज़ीज़ो अक़ारिब से जुदा हो कर उनके पास रहती हैं तो इन्साफ़ का तक़ाज़ा यह है कि उनका

एज़ाज़ किया जाए न कि बात बात में उनके साथ झगड़ा फ़साद किया जाए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के यह फ़रमाने से एक तरफ़ तो हुम्ना बिंत जहश रज़िय-ल्लाहु अन्हा की दिलजोई हो गई और दूसरी तरफ़ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने औरतों के साथ हुस्न-ए-सुलूक की भी तलक़ीन फ़र्मा दी।" (मसायब के नीचे बरकतों के ख़ज़ाने मख़्फ़ी होते हैं, (अनवारूल उलूम भाग 19 पृष्ठ 60) हर बात में एक सबक़ होता है। इन्सान उस को ग़ौर से सुने और सोचे तो फिर पता लगता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बात सिर्फ इस फ़र्द के लिए नहीं थी बल्कि उमूमी तौर पर हर एक के लिए एक नसीहत है।

फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत के इस पहलू कि :

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दूसरों के एहसासात और भावनाओं का किस क़दर एहतेराम था

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन फ़रमाया है कि "जब आप सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना में दाख़िल हुए तो चूँकि ज़ख़मों की वजह से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नक़ाहत ज़्यादा थी इसलिए सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने सहारा देकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सवारी से उतारा। मग़रिब की नमाज़ का वक़्त था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नमाज़ पढ़ी और घर तशरीफ़ ले गए। मदीना की इन औरतों को जिनके रिश्तेदार जंग में शहीद हो गए थे उनकी ख़बरें पहुंच चुकी थीं उन्होंने रोना शुरू कर दिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब औरतों के रोने की आवाज़ें सुनें तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मुस्लमानों की तकलीफ़ का ख़्याल आया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आँखें डुबडुबा आएं। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया لٰكِنْ حَمْزَةُ فَلَا بَوَاكِيَ لَهٗ۔ हमारे चचा और रज़ाई भाई हम्ज़ा भी शहीद हुए हैं लेकिन उनका मातम करने वाला कोई नहीं। यह सुनकर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो जिन को आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के भावनाओं और एहसासात को पूरा करने की इतनी तड़प थी कि वे चाहते थे कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कोई छोटे से छोटा जज़्बा और छोटे से छोटा एहसास भी ऐसा न रह जाए जो पूरा न हो। वे अपने घरों की तरफ़ दौड़े और अपनी औरतों से जा कर कहा बस अब तुम अपने अज़ीज़ों को रोना बंद कर दो और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मकान पर जा कर हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का मातम करो। इतने में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चूँकि थके हुए तशरीफ़ लाए थे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आराम फ़रमाने लगे। हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो ने इशा की अज़ान दी परंतु यह ख़्याल करके कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थके हुए आए हैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को न जगाया सो गए थे। "जब रात के तीन भाग गुज़र गए तो उन्होंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नमाज़ के लिए जगाया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब बेदार हुए तो उस वक़्त महिलाएं अभी तक आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मकान पर हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का नोहा कर रही थीं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह क्या हो रहा है? अर्ज़ किया गया हे रसू-लुल्लाह सल्लल्लाहो वसल्लम! मदीना की महिलाएं हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात पर रो रही हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला मदीना की औरतों पर रहम करे उन्होंने मेरे साथ हमददरी का इज़्हार किया है। फिर फ़रमाया मुझे पहले ही मालूम था कि अंसार को मुझसे बहुत ज़्यादा मुहब्बत है। साथ ही फ़रमाया इस तरह नोहा करना अल्लाह तआला के नज़दीक नापसंदीदा बात है। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारी क़ौम की यह आदत है और अगर हम इस तरह न रोएं तो हमारे भावनाओं सर्द नहीं हो सकते। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं रोने से मना नहीं करता हाँ औरतों से कह दिया जाए कि वह मुँह पर थप्पड़ न मारें। अपने बाल न नोचें।' नोहा करती थीं तो अपने आपको भी मारती पीटती थीं। अपने बाल न नोचें मुँह पर थप्पड़ न मारें "और कपड़ों को न फाड़ें और अगर यूं रक्त के साथ रोना आए' क़ुदरती तौर पर अगर रिक़्क़त के साथ रोना आता है "तो बे-शक रोएं। इन बातों से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अख़लाक़ी हालत का पता चलता है कि बावजूद ज़ख़्मी और तकलीफ़ में होने के आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दूसरों के एहसासात और भावनाओं का कितना एहतेराम था।'

(मसायब के नीचे बरकतों के ख़ज़ाने मख़्फ़ी होते हैं,अनवारुल उलूम भाग 19 पृष्ठ 58-59)

फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस वाक़िया को इस ज़ावीया से वर्णन फ़रमाया है कि "जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह देखा कि मदीना की महिलाएं अपने मरने वालों का नोहा और मातम कर रही हैं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस ख़्याल से कि मुहाजेरीन और हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के रिश्तेदार यह ख़्याल न करें कि हमारा यहां कोई नहीं है। इसलिए उनकी भावनाओं का एहसास करते हुए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आज हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का रोने वाला कोई नहीं? और फिर जब मदीना की महिलाएं हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का मातम करने लग गईं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मना फ़र्मा दिया कि इस तरह मातम करना जायज़ नहीं है। इससे मालूम होता है कि यदि घटना में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यही ख़्याल होता कि हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़रूर मातम किया जाए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाद में मना नहीं फ़रमाते। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात पर किसी के न रोने पर अफ़सोस का इज़्हार फ़रमाया उस समय भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का जज़्बा केवल दिलजोई का था और जब आप सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रोने वालों को मना फ़रमाया उस वक़्त भी आप सल्लल्ला-हो अलैहि वसल्लम की भावना दिलजोई का ही था क्योंकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन औरतों को रोने से रोका भी और साथ ही यह भी फ़रमाया कि उन्होंने मेरे साथ हमदर्दी का इज़्हार किया है और यह फिर फ़रमाया मुझे तो पहले ही मालूम था कि अंसार को मुझ से ज़्यादा हमदर्दी है और यह कहने से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह मतलब था कि वह रोने से मना करने पर बुरा न मनाएं। आप सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मना भी कर दिया और उनका शुक्रिया भी अदा कर दिया। हमें यह कितना शानदार और अज़ीमुश्शान तरीक़ नज़र आता है जो इतने नाज़ुक वक़्त में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इख़्तेयार किया हालाँकि ऐसे वक़्त में जबकि अज़ीज़ और क़रीबी रिश्तेदार मारे जा चुके हों ख़ुद कोई शख़्स ज़ख़्मी हो और मुस्तक़बिल क़रीब के दिनों में ख़तरा महसूस हो रहा हो तो कोई शख़्स इस किस्म का उदाहरण पेश नहीं कर सकता जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किया।"

(मसायब के नीचे बरकतों के ख़ज़ाने मख़्फ़ी होते हैं, अनवारुल उलूम भाग 19 पृष्ठ 60-61)

तारीख़ की कुतुब में इन सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन जिनकी तलवारों ने उहद की जंग में हक़ अदा किया यूं मिलता है कि "जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम घर में दाख़िल हुए तो अपनी बेटी फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा को तलवार पकड़ाते हुए फ़रमाया। اِغْسِلِي عَنْ هٰذَا دَمَهٗ يَا بُنَيَّةُ فَوَاللّٰهِ لَقَدْ صَدَقَنِي الْيَوْمَ۔ हे मेरी प्यारी बेटी इस तलवार पर लगे ख़ून को धो डाल। अल्लाह की क़सम आज तो इस तलवार ने हक़ अदा कर दिया। फिर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा को अपनी तलवार थमाते हुए कहा। इस तलवार पर लगे ख़ून को भी धो डालो। इस अवसर पर उनकी ज़बान पर भी वही शब्द थे जो रसूलु-ल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाए थे कि अल्लाह की क़सम आज तो इस तलवार ने कमाल कर दिखाया है। यह सुन कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाने लगे। لَئِنْ كُنْتَ صَدَقْتَ الْيَوْمَ الْقِتَالَ لَقَدْ صَدَقَ مَعَكَ سَهْلُ بْنُ حُنَيْفٍ وَّ اَبُوْ دُجَانَةَ अगर आज तुमने क़िताल में कमाल कर दिखाया है तो तुम्हारे साथ सहल बिन हनीफ़ और अबू दुजाना ने भी तो ख़ूब बहादुरी की दाद दी है।"

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर तुमने तलवार चलाने में कमाल कर दिखाया है तो सहल बिन हनीफ़ रज़ियल्ला-हु अन्हो, अबू दुजाना रज़ियल्लाहु अन्हो, आसिम बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो और हारिस बिन सिम्मा रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी ख़ूब बहादुरी की दाद दी है।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 7 पृष्ठ 62 प्रकाशन बज़म-ए-इंक़बाल लाहौर)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि "तारीख़ों में लिखा है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने उहद से वापस आकर हज़रत फ़ातमा रज़ियल्लाहु अन्हा को अपनी तलवार दी और कहा उस को धो दो आज इस तलवार ने बड़ा काम किया है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो की यह बात सुन रहे थे आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अली तुम्हारी ही तलवार ने काम नहीं किया और भी बहुत से तुम्हारे भाई हैं जिनकी तलवारों ने जोहर दिखाए हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने छः सात सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के नाम लेते हुए फ़रमाया उनकी तलवारें तुम्हारी तलवार से कम तो नहीं थीं। उद्देश्य आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी बर्दाश्त नहीं किया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दामाद कोई ऐसी बात करे जिससे दूसरे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के दिलों को ठेस पहुंचे। इस से मालूम होता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नज़र छोटी-छोटी बातों पर भी पहुँचती थी और बावजूद सहसा जंग-ए-उहद का वाक़िया मुस्तक़िल असरात के लिहाज़ से इतना बड़ा वाक़िया था कि लोगों को इस

वाक़िया के बाद सख़्त फ़िक्र थी कि दुश्मन अब दिलेर हो जाएगा या आइन्दा क्या होगा और इन्सान ऐसे औक़ात में छोटी-छोटी बातों की तरफ़ तवज्जा ही नहीं देता परंतु आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हर एक के साथ हमदर्दी का इज़्हार किया और सबकी प्रशंसा की।"

(मसायब के नीचे बरकतों के ख़ज़ाने मख़्फ़ी होते हैं,अनवारुल उलूम भाग 19 पृष्ठ 59-60)

जंग-ए-उहद के वाक़ियात यहां ख़त्म होते हैं। एक और ग़ज़वा जिसका नाम ग़ज़वा हमराउल् असद है जो शवाल तीन हिज्री में हुआ उसका वर्णन करता हूँ। यह ग़ज़वा असल में ग़ज़्व-ए-उहद ही का हिस्सा और शेष है और ग़ज़्व-ए-हमराउल् असद से हासिल होने वाले परिणाम की बिना पर ग़ज़्व-ए-उहद को हक़ीक़ी अर्थों में मुस्लमानों ही की फ़तह शुमार किया जाता है।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 7 पृष्ठ 119 प्रकाशन बज़्म-ए-इक़बाल लाहौर)

हम्राउल असद मदीना से ज़ूल् हुलेफ़ा जाते हुए रास्ते के बाएं ओर मदीना से आठ मील के फ़ासले पर एक स्थान है।

(फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 106 ज़व्वार अकैडमी कराची)

(मोअज्जमुल् बुल्दान उर्दू अज़ डाक्टर ग़ुलाम जलानी बर्क़ पृष्ठ 123 अल् फ़ैसल नाशिरान और ताजरान कुतुब लाहौर)

ग़ज़वा हम्राउल असद का कारण क्या बना? इस बारे में लिखा है कि ग़ज़्व-ए--उहद के अंत पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शाम के वक़्त मदीना तशरीफ़ लाए और बावजूद शदीद ज़ख़्मी होने के मग़रिब की नमाज़ भी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के सहारे चल कर मस्जिद में तशरीफ़ ला कर अदा की और इसी तरह इशा की नमाज़ भी मस्जिद में तशरीफ़ ला कर अदा की। नमाज़-ए-इशा के बाद नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने घर तशरीफ़ तो ले गए लेकिन मालूम होता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह सारी रात जागते हुए ही गुज़ारी क्योंकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह संदेह था कि अबू सुफ़ियान अपने लश्कर के साथ मदीना पर हमला करने का प्रोग्राम बना सकता है। इसी वजह से मदीना में एक किस्म की हंगामी हालत ही थी और नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर के बाहर भी मुसलसल पहरा रहा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी मालूम करवाया था कि अबूसुफ़ियान के इरादे क्या हैं। क्या वह मदीना पर हमला करने की तैयारी कर रहा है। हरचंद कि इबतेदाई रिपोर्ट यही मिली कि अबूसु-फ़ियान बड़ी तेज़ी से अपने लश्कर को लेकर मक्का की तरफ़ रवाँ-दवाँ है लेकिन फिर भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस से ग़ाफ़िल नहीं रहे। आख़िर कार नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अंदेशे दुरुस्त साबित हुए और रात अभी पूरी तरह ख़त्म भी नहीं हुई थी कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इत्तिला मिल गई कि अबूसुफ़ियान अपने लश्कर के साथ मदीना पर हमला करने के लिए आने को तैयार है। हुआ यह कि जब मुशरेकीन मैदान-ए-उहद से वापस हुए तो रास्ते में जो लोग भी मिलते और जब उन्हें जंग की ख़बर मिलती तो वे ताना देते कि न तुमने मुहम्मद सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़तल किया और न मुस्लमानों की औरतों को साथ लाए, न उनके क़ैदी लाए और न ही कोई और माल-ए-ग़नीमत साथ लाए हो तो किस फ़तह की बात कर रहे हो? इन तानों को सुनते सुनते यह लश्कर मदीना से कोई चोहत्तर किलो मीटर या कुछ के नज़दीक पचपन किलो मीटर दूर रवि नामी मंज़िल पर पहुंचा और पड़ाव किया तो आपस में इन लोगों की बेहस होने लगी कि बात तो वाक़ई दुरुस्त है कि न हमारे पास कोई क़ैदी है, न माल-ए-ग़नीमत है। इसलिए यह बहुत ही बुरा काम है। हमें वापस लौटना चाहिए और मदीना पर हमला कर देना चाहिए। जबकि इसी लश्कर में मौजूद एक और सरदार सफ़वान बिन अमय ने मश्वरा दिया कि ऐसा हरगिज़ नहीं करना। उस वक़्त मदीना पर हमला करने का सोचना भी नहीं वर्ना बहुत बुरी तरह शिकस्त खाओगे लेकिन अबूसुफ़ियान और इसके दूसरे साथियों की अक्स-रियत ने यही फ़ैसला किया कि हमें मदीना पर हमला करना चाहिए वर्ना मक्का क्या मुँह लेकर जाएंगे। उधर अबूसुफ़ियान के लश्कर में यह मुशावरत जारी रखी थी कि फ़ज्र की नमाज़ के लिए हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो ने अज़ान दी और बैठ कर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाहर तशरीफ़ लाने का इंतेज़ार करने लगे। इतने में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन औफ़ मुज़नी रज़ियल्लाहु अन्हो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तलाश करते हुए आए। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाहर तशरीफ़ लाए तो उन्होंने खड़े हो कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़बर दी कि वह अपने घर वालों की तरफ़ से आ रहे थे कि रास्ते में दौरान-ए-सफ़र यह अबूसुफ़ियान के क़ाफ़िले के पास से गुज़र कर आ रहे थे तो उन्होंने अबूसुफ़ियान और इसके साथियों को यह कहते हुए सुना कि तुम लोगों ने तो कुछ नहीं किया। तुम लोगों ने उन्हें नुक़्सान नहीं पहुंचाया अर्थात मुस्लमानों को नुक़्सान नहीं पहुंचाया और तकलीफ़ नहीं पहुंचाई और फिर तुमने उन्हें छोड़ दिया और तबाह नहीं किया। कुफ़्फ़ार ने कहा कि इन मुस्लमानों में कई ऐसे बड़े-बड़े लोग बाक़ी हैं जो तुम्हारे मुक़ाबले के लिए इकट्ठे होंगे। अतः वापस चलो ताकि हम उन लोगों को जड़ से उखेड़ दें जो उनमें बाक़ी रह गए हैं। सफ़वान बिन अमय इस बात से उन्हें रोकने लगा और कहने लगा कि हे क़ौम! ऐसा नहीं करना क्योंकि वे लोग जंग लड़ चुके हैं और मुझे ख़ौफ़ है कि जो लोग जंग में आने से रह गए थे अब वे तुम्हारे मुक़ाबले में उनके साथ जमा हो जाऐंगे। तुम वापस चलो क्योंकि फ़तह तो तुम्हारी ही है क्योंकि मुझे ख़ौफ़ है कि अगर तुम वापस गए तो तुम शिकस्त खा जाओगे।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब ये सारी बात सुनी तो फ़रमाया कि सफ़वान इतना समझदार तो नहीं है लेकिन इस की ये बात बहुत समझदारी की है अर्थात अबूसुफ़ियान को मदीना पर हमला करने से रोकना। लेकिन साथ ही नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बड़े जलाल से फ़रमाया :

उस ज़ात की क़सम है जिसके क़ब्ज़ा में मेरी जान है कि अगर वे मदीना पर हमला-आवर हुए तो उनके लिए ऐसे पत्थरों को निशान लगा दिए गए हैं कि जिनकी बारिश से उनका इस तरह नाम-ओ-निशान मिट जाएगा जैसे गुज़रा हुआ कल होता है।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 7 पृष्ठ 63- 120 प्रकाशन बज़्म-ए-इक़बाल लाहौर

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद अनुवादक भाग 4 पृष्ठ 267-268 प्रकाशन मक्तब रहमानिया लाहौर)

बहरहाल आगे उसकी तफ़सील है जो इन शा अल्लाह आइन्दा वर्णन करूँगा

दूसरी बात जो उमूमन में तहरीक करता रहता हूँ वह दुआ के लिए है।

दुआएं जारी रखें जैसा कि ख़्याल था और संदेह था। ईरान पर बराह-ए-रस्त भी इसराईल ने हमला कर दिया है। हर एक को पता ही है। इस से मज़ीद हालात ख़राब होंगे।

अल्लाह तआला दुनिया के इन लीडरों को भी अक़्ल दे जो विश्वयुद्ध को हवा देने की मज़ीद कोशिश कर रहे हैं और मुस्लिम उम्मा को भी समझ और अक़्ल दे और उनको तौफ़ीक़ दे कि वह एक बन कर फिर अपने मुक़ाबिल का सही तरह मुक़ाबला कर सकें और हिक्मत अपना सकें।

इस वक़्त मैं दो मरहूमीन का भी वर्णन करना चाहता हूँ जिसमें पहला वर्णन है श्रीमान मौलाना ग़ुलाम अहमद साहिब नसीम। यह मुरब्बी सिलसिला थे। जामिआ अहमदिया रब्वाह में प्रोफ़ैसर रहे। आजकल अमरीका में थे। पिछले दिनों यह 93 वर्ष की आयु में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

उनके पिता का नाम सलाह मुहम्मद साहिब था जिन्हों ने कुसूफ़-ओ-ख़ुसूफ़ का निशान देखकर महदी की तलाश शुरू की। सूरज चांद ग्रहण का निशान देखा तो उस वक़्त उन्होंने महदी की तलाश शुरू की और इस में कई वर्ष गुज़र गए और फिर 1901 ई. में बैअत की उनको सआदत मिली। दूर दराज़ इलाक़ा होने की वजह से कादियान ज़ियारत के लिए नहीं पहुंच सके। मीर सलाह मुहम्मद साहिब अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मूसी थे और क़बूल-ए-अहमदीयत की वजह से उन्हें शदीद मुख़ालेफ़त का सामना भी करना पड़ा। अपने गांव में यह अकेला अहमदी घराना था। मीर ग़ुलाम अहमद नसीम साहिब ने दौरान-ए-तालीम 1947 ई. में वक़्फ़ का ख़त लिखा तो उनके वक़्फ़ की मंज़ूरी भी आ गई और फिर उनको साथ यह भी हिदायत मिली कि पढ़ाई जारी रखें। पार्टीशन के बाद 1948 ई. में मदरस्सा अहमदिया अहमद नगर में तालीम शुरू की। 1954 ई. में मौलवी फ़ाज़िल पास किया और फिर जामेअतुल अल् मुबश-रीन से शाहिद की डिग्री हासिल की। 1957 ई. में मैदान-ए-अमल में आए। 1960 ई. में आप सीरालियोन पहुंचे यहां तीन वर्ष मुबल्लिग के साथ साथ अहमदिया स्कूल (Bo) के हेडमास्टर के तौर पर भी ख़िदमात करते रहे। पाकिस्तान वापस आने पर उनका तक़र्रुर जामिआ अहमदिया में हुआ। यहां लाइब्रेरी में मोहतमिम के फ़रायज़ भी अंजाम दिए। कोई उस्ताद रुख़्स्त पर होता तो पीरियड भी लेते थे। इस दौरान आपने एम.ए अरबी का इमतेहान पंजाब यूनीवर्सिटी से पास किया। 1966 ई. में उनका तक़र्रुर घाना में हुआ। यहां आपने सवा चार साल ख़िदमात सरअंजाम दी। 1970 ई. में उनकी मर्कज़ वापसी हुई। 1970 ई. से 1975 ई. तक जामिआ अहम-दिया में बतौर उस्ताद खासतौर पर ग़ैर मुल्की विद्यार्थियों को पढ़ाने पर निर्धारित हुए। 75 ई. से 79 ई. चार वर्ष आपने ज़ेमबया अफ़्रीक़ा में बतौर मुबल्लिग़ ख़िदमात सरअंजाम दीं। फिर 1980 ई. से 1997 ई. तक जामिआ अहमदिया में तारीख़ और

तसव्वुफ के उस्ताद के तौर पर ख़िदमात बजा लाते रहे।

उनके वाक़ियात में लिखा है कि आप सीरालियोंन, घाना और ज़ेमबिया में ग्यारह वर्ष तक ख़िदमात बजा लाते रहे और पूरा अरसा फ़ैमिली के बग़ैर बैरून-ए-मुमालिक में रहे। उनकी पत्नी का वर्णन और उनकी क़ुर्बानियों का वर्णन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे ने भी एक तक़रीर में किया था।

उनकी पत्नी अम्तुल मनान क़मर साहिबा फ़ज़्ल-ए-उम्र गर्लज़ स्कूल रब्वाह की साबिक़ हैड मिस्टरस थीं। अल्लाह तआला ने आपको चार बच्चों से नवाज़ा जो ख़िदमात में पेश-पेश हैं और वे सारे ही अच्छे पढ़े लिखे हैं।

उनकी एक बेटी डाक्टर अम्तुल शकूर साहिबा हैं ये डाक्टर अब्दुलहफ़ीज़ की अपत्नी हैं। यह अमरीका में हैं। यह भी नुसरत जहां स्कीम के तहत गेम्बया और तनज़ानिया में ग्यारह वर्ष तक ख़िदमात सरअंजाम देती रहीं।

इलमी काम भी उनका है। यह तीन कुतुब के मुसन्निफ़ हैं। क़ामूस अल् रोया, (ख़्वाबों की ताबीर। हुरूफ़-ए-अबजद के लिहाज़ से तसव्वुफ़)। रुहानी साईंस, यह उनकी दूसरी किताब है और तीसरी किताब है याद-ए-अय्याम, उनकी आप बीती स्थिति वर्णन हैं।

इनामुल् हक़ कौसर मिशनरी इंचार्ज आस्ट्रेलिया लिखते हैं कि आजिज़ी और इन-केसारी के साथ शागिर्दों को ख़ूब पढ़ाने वाले और उनका ख़्याल रखने वाले थे। कहते हैं मैं ब्रिटिश घाना दौरे पर गया तो तीन चार दिहात में उनके ज़रीया से जो जमातें क़ायम हुई थीं वहां सब पुराने लोगों ने उनका वर्णन बहुत उम्दा तरीक़ पर किया और उनकी तस्वीर अपने पास रखी हुई थी। अल्लाह तआला ने उनके ज़रीया ब्रिटिश गयाना में एक मज़बूत जमात क़ायम की।

लईक मुश्ताक़ साहिब मुरब्बी सिलसिला सूरीनाम लिखते हैं कि मौलाना मीर ग़ुलाम अहमद नसीम साहिब ने गयाना में क़ियाम के दौरान 67 ई. से 69 ई. तक सूरीनाम के तीन दौरे किए और यहां हफ़्तों क़ियाम करके इस जमात को अज़ सर-ए-नौ फ़आल किया। इस ज़माने में मुख़्तलिफ़ वजूहात की बिना पर अफ़राद-ए-जमात की अक्स-रियत ने अलैहदगी इख़्तेयार कर ली थी और चंद अहमदी मौजूद थे। उनका भी मर्कज़ से संपर्क मुनक़ते हो गया था। इन हालात में मुहतरम मौलाना ग़ुलाम अहमद नसीम साहिब घाना से सूरीनाम आए और 15 सितंबर 67 ई. को पहला इजलास करवाया जिस में छः अफ़राद ने शिरकत की और जमात से अटूट रिश्ता क़ायम करने का अह्द किया। इन दिनों पाकिस्तान से मौलवी शाह अहमद नूरानी भी सूरीनाम आया हुआ था और जमात के ख़िलाफ़ जगह जगह नफ़रत आमेज़ तक़रीरें कर रहा था। मौलाना नसीम साहिब ने भी असंख्य जलसे करके इसके इल्ज़ामात के जवाबात दिए तथा रेडीयो पर सदाक़त हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हवाले से तीन प्रोग्राम मई 1968 ई. में दूसरे दौरे के दौरान निर्माण अधीन मस्जिद के साथ मिशन हाऊस की बुनियाद रखी और इसकी तामीर चंद सालों में मुकम्मल हुई। लाहौरी जमात के इमाम अब्दुर्रहमान जग्गू और सुन्नी जमाअत के इमाम को मुनाज़रे का चैलेंज दिया। आपने सदाक़त हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर कई फोल्डर भी प्रकाशित किए।

21 जून 1968 ई. को जमात के एक मैंबर के घर में मुनाक़िदा मज्लिस सवाल--ओ-जवाब के दौरान शर पसंद मुस्लमानों ने जमात के लोगों पर हमला कर दिया और कहते हैं कि हैड टेबल एक कमरे के दरवाज़े के सामने रखा हुआ था। मौलाना साहिब के दाएं बाएं बैठे लोगों ने आपको धकेल कर कमरे के अंदर किया और बाहर से दरवाज़ा बंद कर दिया। हमला आवरों ने अफ़राद-ए-जमात को शदीद ज़द्द-ओ--कूब किया और लकड़ी की कुर्सियाँ उठा-उठा कर उन्हें मारीं। इस वाक़िया में मर्दों के इलावा कई महिलाएं भी शदीद ज़ख़्मी हुईं। मौलाना साहिब कमरे के अंदर से चलाते रहे कि मुझे बाहर निकालो। में भी उनका मुक़ाबला करूँगा। बड़ी जुर्रत वाले थे। शर-पसंद मौलाना साहिब का एक ब्रीफकेस भी साथ ले गए जिसमें आपका पासपोर्ट और दीगर सामान था। कई दिन बाद पुलिस ने यह बरामद किया। बहरहाल इस वाक़िया के बाद आपने भरपूर तरीक़ पर पुलिस और मुताल्लिक़ा आफ़सरान से संपर्क करके अफ़राद-ए-जमात के तहफ़्फ़ुज़ को यक़ीनी बनाने की कोशिश की।

कल्चरल सैंटर में इस्लाम और अस्र-ए-हाज़िर के मसायल पर लैक्चर दिया। जमात के लोगों को मर्कज़ से बाक़ायदा संपर्क रखने की तलक़ीन की। यूं आपकी मसाई से एक बिखरी हुई जमाअत दुबारा अपने क़दमों पर खड़ी हो गई और अल्लाह के फ़ज़्ल से बाद में जाने वाले मुबल्लग़ीन ने भी इस को मज़ीद मज़बूत किया और अब यह मज़बूत जमात है।

अल्लाह तआला मरहूम के दर्जात बुलंद फ़रमाए और उनकी औलाद और नसलों में भी ये नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक प्रदान करे।

अगला वर्णन श्रीमान डाक्टर एहसानुल्लाह ज़फ़र साहिब साबिक़ अमीर जमात अमरीका का है। पिछले दिनों उनकी इकासी 81 साल की उम्र में वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मूसी थे। एक लंबा अरसा बतौर मुक़ामी सदर, नायब अमीर जमात अमरीका और 2002 ई. से 2016 ई. तक उन्होंने बतौर अमीर जमात अमरीका ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। बहुत सी ख़ूबियों के मालिक थे। निहायत मुहब्बत करने वाले और शफ़ीक़ इन्सान थे। बहुत वसीअ हौसले के मालिक थे। पीछे रहने वालों में दो बेटियां हैं। उनकी अपत्नी चंद साल पहले एक ऐक्सिडेन्ट में वफ़ात पा गई थीं और इसी तरह बेटा भी वफ़ात पा गया था। वह सदमे भी उन्होंने बड़े सब्र और हौसले से बर्दाश्त किए और कभी शिकवा ज़बान पर नहीं लाए।

आपकी बेटी डाक्टर हाना मर्यम कहती हैं कि मेरे पति बहुत नेक और दीनदार शख़्स थे। नमाज़ और क़ुरआन और चंदे की अदायगी में बाक़ायदा होने के साथ साथ ख़ुदा तआला से अपना ताल्लुक़ हमेशा बढ़ाने में लगे रहते थे। दिन में कई मर्तबा अकेले या मजालिस में बैठे हुए हाथ उठा कर दुआ करते थे। वह कभी यह नहीं सोचते थे कि दूसरे मेरे बारे में क्या सोचेंगे। ज़िंदगी की मुश्किलात के बावजूद उन्होंने अपने बच्चों को हमेशा यह बात सिखाई कि ख़ुदा तआला का हर हाल में शुक्र अदा करना चाहिए। कहती हैं मेरे वालिद साहिब ख़िलाफ़त के भी बहुत मुख़लिस और फ़िदाई थे। उनका दीनी, तारीख़ी और सयासी इलम बहुत वसीअ था। आख़िरी मर्तबा हस्पताल जाने वाले दिन भी उन्होंने अख़बार का मुताला किया और मेरा ख़ुतबा सुना और तारीख़ से मुताल्लिक़ा इंटरव्यूज़ देखे और मुझे भी कहा कि यह देखो। अपने इलम और राय को दूसरों के इलम और राय पर कभी फ़ौक़ियत नहीं देते थे बल्कि आराम से सुनते थे, ग़ौर करते थे, परखते थे। क़ुरआन-ए-करीम और इसके अनुवाद का उनको बहुत गहरा इलम था। कहती हैं हमें क़ुरआन-ए-करीम के शब्द के अर्थ बताने के साथ-साथ यह भी बताते थे कि इन तालीमात का हमारी ज़िंदगी पर क्या असर है। ज़ाती ज़िंदगी में मुहब्बत-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का भी पहलू नज़र आता है। इसी तरह उनमें अल्लाह तआला की शुक्रगुज़ारी भी थी। कहती हैं कि एक दिन खाने के दौरान वह दुआ करने लग गए। उन्होंने हमें बताया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उनके सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के पास बाज़-औक़ात खाने की इतनी क़िल्लत होती थी कि खजूर और रोटी को सिरका में डुबो कर खा लेते थे। इतना कुछ होने के बावजूद हम और ज़्यादा की तमन्ना करते हैं। हमें शुक्रगुज़ार होना चाहिए। ज़रूरतमंदों की मदद करने का उनमें बहुत जज़्बा था।

1967 ई. में उन्हें मक्का जाने का अवसर मिला। रास्ते में उनकी नज़र एक शख़्स पर पड़ी जिसने मुँह से तो कुछ नहीं कहा लेकिन उस की आँखों ने मदद और भूख का इज़्हार किया। कहती हैं मेरे वालिद ने इस शख़्स को कुछ रक़म दी जो उनके पास थी और उसने अपनी आँखों से ही शुक्रिया अदा किया और खाने के स्टॉल की तरफ़ चला गया। कहती हैं कुछ साल पहले वह तीन तुर्की क़ालीन ख़रीद कर घर ले आए। यह देखकर मेरी माता ने उन्हें कहा कि आपने बहुत महंगे ले लिए हैं उनकी तो हमें ज़रूरत भी नहीं थी। उन्होंने बताया कि जिस औरत ने मुझे यह फ़रोख़्त किए हैं इस की आमदनी का यही एक ज़रीया है। मैं ने इस का जज़्बा देखकर उसकी मदद करना चाही थी। हमेशा दूसरों की ख़ूबियों को देखते थे न कि उनकी ख़ामियों को। अपने बच्चों को भी तलक़ीन करते थे कि मुश्किलात के सामने कभी घबराना नहीं चाहिए। हमेशा हर चीज़ ख़ुदा तआला से मांगनी चाहिए और जो ख़ुदा अता कर दे उस पर राज़ी होना चाहिए। कहती हैं वह हम सब के लिए यही नसीहत करते थे और बार-बार करते थे।

डाक्टर नसीम रहमतुल्लाह साहिब उनके बारे में लिखते हैं कि मैं 1989 ई. से डाक्टर एहसानुल्लाह ज़फ़र साहिब के साथ काम कर रहा हूँ। बहुत ही नेक और मुत्तक़ी इन्सान थे। ख़िलाफ़त के साथ गहरा और वालेहाना इशक़ रखते थे। डाक्टर मुबश्शिर मुमताज़ साहिब अमरीका लिखते हैं कि आमिला के मैंबरान को निहायत ही नरम लहजे में हिदायात देते। अगर वह किसी तजवीज़ से इत्तिफ़ाक़ नहीं रखते तो उस के रद्द में दलील पेश कर के समझाते। यह नहीं कि ज़बरदस्ती अपना हुक्म ठोंस दिया। जब कोई संजीदा बात करते तब भी लहजे में सख़्ती नहीं लाते। जो बात समझाते वह दिल की गहराईयों में उतरती।

मिर्ज़ा एहसान लिखते हैं कि ख़ाकसार को एहसानुल्लाह ज़फ़र साहिब के साथ एक लंबा अरसा काम करने की तौफ़ीक़ मिली। बतौर अमीर जमात के लोगों को ख़िलाफ़त और जमात के साथ मज़बूत ताल्लुक़ क़ायम करवाते हुए देखा। सादा-मिज़ाज, दर्द मंद, सुलह जो, ग़रीबों के हमदरद, दिखावा और बनावट से पाक, बुख़्ल और लालच से बिल्कुल पाक इन्सान थे। अपने ख़ज़ाने जमात और ग़रीबों के लिए खोल देने वाले थे। क़ुरआन-ए-मजीद की तफ़सीर और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की

कुतुब के मुताला में महव रहते थे। तकब्बुर, बड़ाई और ख़ुद-पसंदी से पूर्णतः पवित्र थे और ख़लीफ़-ए-वक़्त की ज़रा सी भी नाराज़गी से बेचैन हो जाते थे। यह तो मैं ने ख़ुद भी तजुर्बा किया है। ज़रा सी भी कोई ऐसी बात होती जो मैं उनके बारे में उनको लिखता तो हमेशा उन्होंने बड़ी बेचैनी का इज़हार किया और फ़ौरी तौर पर माफ़ी मांगी और हालात को इसके मुताबिक़ करने की कोशिश की। किताबों का बे-इंतिहा शौक़ था। उनकी ज़ाती लाइब्रेरी में ऐसी-ऐसी नादिर किताबें मौजूद हैं कि इन्सान हैरान रह जाता है। आपको क़ुरआन-ए-करीम से मुहब्बत और इशक़ था। कोई मज्लिस हो, कोई महफ़िल हो हर वक़्त क़ुरआन-ए-मजीद की आयात पर ग़ौर करते रहते थे। उनकी महफ़िल बे-तकल्लुफ़ और मुहब्बत से हर एक को अपनी तरफ़ खींचने वाली होती थी। अपने लिए बतौर अमीर कभी कोई प्रोटोकोल रवा नहीं रखा। बहुत सादा-मिज़ाज थे।

ज़हीर बाजवा साहिब लिखते हैं कि एक दोस्त ने मुझे बताया कि डाक्टर एहसानुल्लाह साहिब ख़ामोशी से मस्जिद में आते और जब कोई नहीं होता तो अकेले मस्जिद और बाथरूम की सफ़ाई करते। जब उनसे वजह पूछी तो उन्होंने कहा इस ज़रीया से मुझे अपनी रूह की सफ़ाई करने का अवसर मिलता है। बहुत आजिज़ी थी। फिर यह लिखते हैं कि डाक्टर साहिब की ख़ुदा से मुहब्बत, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाम का इदराक, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से उनकी मुहब्बत और खलिफ़ा से उनकी अक़ीदत मिसाली थी। उनकी क़ुरआन-ए-करीम से मुहब्बत तो वर्णन से बाहर है। कहते हैं जब भी हम इकट्ठे कार में बैठते तो क़ुरआन-ए-करीम की सी डी लगी होती थी और घर में हमेशा एम.टी.ए लगा रहता था। जब भी बैतुलरहमान आते तो हमेशा एम.टी ए या तिलावत लगा देते। उनके घर में हर तरफ़ क़ुरआन ही क़ुरआन और तफ़ासीर मौजूद हैं और कुतुब की एक कसीर तादाद क़रीबन हर कमरे में और अलमारी में मौजूद है। सिर्फ मौजूद ही नहीं होती थी उनका वह बाक़ायदगी से मुताला भी किया थे।

जब यह रब्वाह में पढ़ा करते थे तो डाक्टर साहिब की वालिदा की ख़ाहिश थी कि रोज़ाना हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो से मिलीं और हज़रत मौलाना ग़ुलाम रसूल साहिब राजेकी रज़ियल्लाहु अन्हो से मिला करें और उनको दुआ की दरख़ास्त करें। डाक्टर साहिब कहते हैं मैं जहां तक संभव हो यह कोशिश करता रहता था और मेरी कामयाबी तालीमी मैदान में भी और दूसरी तर्बीयत में भी इस में इन दोनों बुज़ुर्गों का बहुत ज़्यादा हाथ है। हर किसी से प्यार करते थे परंतु जो ख़ास प्यार मैं ने उनकी आँखों में ग़रीब अहमदियों के लिए देखा वह वर्णन से बाहर है। वह किसी का बुरा सोच ही नहीं सकते थे लेकिन जो शख़्स, जो ख़ुशहाल अहमदी जमाअत के लिए क़ुर्बानी में आगे नहीं आते थे उनके बारे में डाक्टर साहिब के दिल में एक ख़लिश सी रहती थी उसका कभी कभी इज़हार भी कर दिया करते थे। उनकी शदीद ख़ाहिश थी कि हर अहमदी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का सही मुक़ाम समझे। उनकी यह ख़ाहिश थी कि हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पैग़ाम को समझें, अपनाएं और फैलाएं और इसके लिए वह नए-नए तरीक़े भी सोचते रहते थे। मुझे भी कई दफ़ा लिखते रहते थे। मसाजिद बनाने की तरफ़ भी उनकी बहुत तवज्जा थी। उनके ज़माने में काफ़ी मसाजिद बनी हैं। उनका दुआ पर एतेक़ाद बहुत पुख़्ता था। एक दफ़ा आमिला मीटिंग में किसी ने कोई ऐसी बात की जिससे दुआ की अज़मत में कमी का एहसास होता था। कहते हैं कि मैं ने उनको आमिला में कभी इतना ग़ुस्सा में नहीं देखा जैसा इस अवसर पर था।

इंतेहाई सादा ज़िंदगी गुज़ारते थे। अगर कोई शौक़ था तो मस्जिदें बनाने का शौक़ था। हर किसी की हर बात मानते थे मगर मस्जिद न बनाने की बात को बहुत बुरा समझते थे। जब तक उनकी सेहत ठीक थी हर जुमेरात को मस्जिद बैतुल लंसर Willingboro की मुकम्मल सफ़ाई ख़ुद करते थे। अल्लाह तआला ने आपको हमेशा माली क़ुर्बानी में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने की तौफ़ीक़ बख़शी।

मिर्ज़ा मग़फ़ूर अहमद साहिब जो आजकल अमीर जमात अमरीका हैं वह लिखते हैं कि डाक्टर एहसानुल्लाह ज़फ़र साहिब को अल्लाह तआला ने एक लंबा अरसा पहले नायब अमीर और फिर बहैसीयत अमीर जमात अहमदिया अमरीका की ख़िदमत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई और जो मेरे दौरे हैं, उनके ज़माने में जब वह अमीर थे मैं ने अमरीका में तीन दौरे भी किए और उन्होंने बड़ी ख़ुश-उस्लूबी से मेरे इन दौरों को भुगताया और इंतेज़ामात किए। कहते हैं कई सालों से बीमारी की वजह से उनका चलना फिरना महिदूद हो गया था परंतु इमारत की ज़िम्मेदारियों को ख़ुश-दिल्ली से मुकम्मल तौर पर अदा करते रहे। उनकी गुफ़्तगु में अक्सर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हवाले से बात होती थी। बातें करते थे तो गुफ़्तगु में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हवाले से बात करते। आपकी कुतुब के हवाले दिया करते थे। और हुज़ूर अलैहिस्सलाम से एक ख़ास ताल्लुक़ का इज़हार होता था। ख़िलाफ़त के साथ बड़ा गहरा और इताअत का ताल्लुक़ था और फिर मौजूदा अमीर साहिब अमरीका लिखते हैं। मुझे लिख रहे हैं कि आपकी सारी हिदायात जो आती थीं उनको जमात के लोगों तक फ़ौरन पहुंचाने की कोशिश करते थे। बहरहाल मैं ने भी देखा है जैसा कि मैं ने कहा ख़िलाफ़त की इताअत उनमें बेमिसाल थी। अपनी राय ख़ुद छोड़ देते थे और बड़ी ख़ुशदिली से थे।

अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद फ़रमाए। उनकी बच्चीयों को भी अल्लाह तआला अपनी हिफ़ाज़त में रखे और उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

★ ★ ★

दारुस्सनाअत कादियान (Ahmadiyya Vocational Training Centre) में वर्ष 2024-2025 के प्रवेश लिए दाख़िला शुरू है

दारुस्सनाअत कादियान का आरंभ हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की मंज़ूरी और विशेष राहनुमाई से 2010 ई. में हुआ। विभाग का विशेष उद्देश्य अहमदी विद्यार्थियों को हुनर-मंद बनाना और टेकनीकल कोर्स विशेषता रोज़गार के अवसर पैदा करना है। दारुस्सनाअत कादियान सरकारी विभाग NSIC दिल्ली और ISO रजिस्टर्ड है। जिसमें एक वर्ष के निम्नलिखित कोर्स करवाए जाते हैं।

\Plumbing
Electrician
Welding
Motor Vehicle
AC & Refrigerator
Diesel Mechanic
Computer Applications

कादियान के बाहर से आने वाले अहमदी विद्यार्थियों के लिए hostel और mess का इंतेज़ाम उपलब्ध है । रहने और food की कोई फ़ीस नहीं है। केवल कोर्स की बोर्ड फ़ीस आसान किस्तों में ली जाती है। ऐसे अहमदी नौजवान जो अपने स्कूल की शिक्षा पूर्ण नहीं कर सके या 8th और 10th के बाद टेक्नीकल कोर्स करने के ख़ाहिशमंद हों प्रवेश के लिए जल्द संपर्क करें। अहमदी बच्चों की दीनी शिक्षा का भी इंतेज़ाम मौजूद है। इसके अतिरिक्त रोज़ाना English Speaking और Personality Developmentकी क्लास भी ली जाती है। नए सैशन 2024-2025 के लिए दाख़िला शुरू हो गया है। जिसकी क्लासिज़ 16 जुलाई से शुरू होंगी।

अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित नम्बरज़ Email Id पर संपर्क कर सकते हैं।

darulsanaat.qadian@gmail.com
9872725895, 8077546198
(प्रिंसिपल दारुस्सनाअत कादियान)

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया हे इब्न-ए-खत्ताब आइन्दा कभी क़ुरैश हमारे साथ ऐसा मुआमला नहीं कर पाएँगे यहां तक कि हम हज्र-ए-असवद को चुंबन देंगे

ग़ज़व-ए-हम्राउल असद के हावले से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पवित्र सीरत-ए-मुबारका और सहाबा कराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन के इशक़-ओ-वफ़ा और क़ुर्बानियों का ईमान अफ़रोज़ वर्णन

दुनिया के हालात के लिए की तहरीक अल्लाह तआला हर अहमदी को हर किस्म के शर से महफ़ूज़ रखे

आस्ट्रेलिया में अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए जाम-ए-शहादत पीने वाले फ़राज़ अहमद ताहिर शहीद की विशेषताओं का वर्णन और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

उनकी यह क़ुर्बानी ज़ाहिर करती है कि वह पाकिस्तान से मौत के डर से नहीं आए थे बल्कि जो मज़हबी पाबंदियां अहमदियों पर लगाई जाती हैं उनसे तंग आकर मुल्क छोड़ा था, जहां उन्हें अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम लेने से जाता है

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 26 अप्रैल 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُولُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

ग़ज़व-ए-हम्राउल असद का सबब और इसकी पृष्ठभूमी पिछले ख़ुतबा में वर्णन हुई थी। बहरहाल जब दुश्मन के उहद की जंग के बाद रास्ता से पलट कर मदीना पर हमला करने की साज़िश का इलम हुआ तो इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को बुलाया और उनको इस मुज़न्नी सहाबी की बात बताई जिन्हों ने यह सूचना दी थी। तो इन दोनों ने अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दुश्मन की तरफ़ चलें ताकि वे हमारे बच्चों पर हमला-आवर न हों। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सुबह की नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लोगों को बुलवाया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया कि वह ऐलान करें कि रसूलुल्लाह तुम्हें हुक्म दे रहे हैं कि दुश्मन के लिए निकलो और हमारे साथ वही निकले जो पिछले रोज़ लड़ाई में शामिल था अर्थात उहद की लड़ाई में जो लोग शामिल थे केवल वही साथ जाऐंगे।

इस्लामी पर्चम और फिर मदीना की कायमकामी के बारे में लिखा है कि आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपना झंडा मंगवाया जो कि पिछले रोज़ से ही बंधा हुआ था, इसको अभी तक खोला नहीं गया था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह झंडा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो को दे दिया और एक जगह यह भी वर्णन हुआ है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को दिया था। उस अवसर पर हज़रत इबन उम्मे मक्तूम रज़ियल्लाहु अन्हो को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना में अपना नायब मुक़र्रर किया था।

(सिबलुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 308-309 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

सीरत निगार लिखते हैं कि आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दुश्मन के पीछे निकलने का फ़ैसला इंतेहाई दानिशमंदाना था। तफ़सील में वर्णन हुआ है कि मुनाफ़क़ीन के नज़दीक जंग-ए-उहद में सत्तर अफ़राद के जानी नुक़्सान के बाद अगले ही रोज़ दुश्मन के पीछे में बिना अधिक लोगों की शक्ति के जाना अत्यधिक ख़तरनाक था परंतु बाद के हालात ने साबित कर दिया कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फ़ैसला इंतेहाई दानिशमंदाना था जिससे मुस्लमानों को बेशुमार फ़वाइद हासिल हुए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सारी रात जंग से पैदा शुदा सूरत-ए-हाल पर ग़ौर करते गुज़ारी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अंदेशा था कि अगर उहद से वापस मक्का जाने वाले मुशरेकीन ने सोचा कि मैदान-ए-जंग में अपना पल्ला भारी होते हुए भी हमने कोई फ़ायदा नहीं उठाया तो निसन्देह उन्हें नदामत महसूस होगी और वह रास्ते से पलट कर मदीना पर दुबारा हमला करेंगे इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बेहतरीन जंगी हिकमत-ए-अमली अपनाते हुए दुश्मन के पीछे का फ़ैसला फ़रमाया। इस फ़ैसले ने मुजाहेदीन के हौसलों को मज़ीद बुलंदियों तक पहुंचा दिया और मुनाफ़क़ीन के दिल पर हुज़ूर अलैहिस्सलाम की क़ुव्वत-ए-इरादी और क़ुव्वत-ए-यक़ीन की हैबत तारी कर दी। तीसरी तरफ़ जब दुश्मन को ख़बर मिली कि इस्लामी लश्कर उनके पीछे में है तो उनके हौसलों के टिमटिमाते चिराग़ बुझने लगे।

(ग़ज़वात-ओ-सराया अज़ अल्लामा मुहम्मद अज़हर पृष्ठ 215 फ़रीदिया पब्लिशरज़ साहीवाल) यह एक सीरत की किताब का नोट है।

मुनाफिको के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबय ने भी साथ जाने की इजाज़त मांगी और वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आकर इस ग़ज़वा में शामिल होने की दरख़ास्त करने लगा हालाँकि ग़ज़व उहद में न केवल यह ख़ुद वापस गया था बल्कि अपने हमराह तीन सौ साथी भी लेकर पलट गया था। ऐसी हरकत पर निसन्देह वह शर्मिंदा भी होगा और शायद इस नदामत का दाग़ मिटाने के लिए, या ख़ुद मालूम किसी और साज़िश के तहत क्योंकि मुनाफ़ेक़ीन का तो पता कुछ नहीं होता, यह नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जाने की इजाज़त तलब की तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे साथ जाने से मना फ़र्मा दिया।

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 7 पृष्ठ 121 प्रकाशन बज़्म-ए-इक़बाल लाहौर) उन्होंने कहा नहीं।

उहद के ज़ख़्मी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो में से बाज़ों को जंग में कारी ज़ख़्म लगे थे। इसके बावजूद उन्होंने आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म की बजा आवरी का क्या उदाहरण दिखाया इस बारे में लिखा है कि आँहज़रत सल्ल-

ल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह ऐलान था कि सुनते ही इशक़-ओ-वफ़ा के ये मुख़लिस जांनिसार अपने ज़ख़्मों को सँभालते हुए, अपने शस्त्रों को लिए हुए एक-बार फिर निकल पड़े। जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ये ऐलान फ़रमाया तो फ़ौरी तौर पर वे निकल पड़े। हज़रत उसेद बिन हुज़ैर रज़ियल्लाहु अन्हो को नौ ज़ख़्म लगे हुए थे उन्होंने अभी दवा लगाने का इरादा ही किया था कि उनके कानों में यह आवाज़ पड़ी तो अपने ज़ख़्मों पर दवाई लगाने के लिए भी नहीं रुके और चल पड़े। बनू सलमा से चालीस ज़ख़्मी निकले। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें ऐसी हालत में भी हुक्म की तामील करते हुए देख कर उनके लिए दुआ-ए-मग़्फ़िरत की फ़रमाया : اَللّٰھُمَّ ارْحَمْ بَنِیْ سَلَمَہ. हे अल्लाह बनू सल्मा पर रहम फ़र्मा :

तुफ़ैल बिन नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो को तेराह ज़ख़्म लगे थे। ख़िराश बिन सिम्मा रज़ियल्लाहु अन्हो को दस ज़ख़्म लगे थे। काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो को दस से अधिक ज़ख़्म और कुतेबा आमिर रज़ियल्लाहु अन्हो को नौ ज़ख़्म लगे थे लेकिन इसके बावजूद मुस्लमान अपने हथियारों की तरफ़ दौड़े और अपने ज़ख़्मों पर मरहम लगाने के लिए नहीं ठहरे। ख़ुदा तआला ने अस्हाब-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उसी जज़्ब-ए-बेमिसाल को अपने कलाम में मर्क़ूम फ़र्मा दिया ताकि रहती दुनिया तक के लिए उन पर अक़ीदतों के फूल निछावर होते रहे। ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि اَلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ مِنْۢ بَعْدِ مَآ اَصَابَهُمُ الْقَرْحُ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا اَجْرٌ عَظِيْمٌ (आले इमरान : 173)

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 308 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

(दायरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भाग 7 पृष्ठ 122 प्रकाशन बज़्म-ए-इक़बाल लाहौर)

वे लोग जिन्हों ने अल्लाह और रसूल को लब्बैक कहा बाद उसके कि उन्हें ज़ख़्म पहुंच चुके थे उनमें से उन लोगों के लिए जिन्होंने एहसान किया और तक़्वा इख़्तेयार किया बहुत बड़ा अज्र है।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाया करती थीं कि इसके एक मिस्दाक़ हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ियल्लाहु अन्हु भी हैं।

(अल् सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 350 दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो को साथ जाने की इजाज़त के बारे में वर्णन मिलता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से यह ऐलान किया गया था कि इस मुहिम में केवल वही साथ जाएंगे जो जंग-ए-उहद में शामिल हुए थे और इसी पर सख़्ती से अमल भी हुआ। लेकिन एक ख़ुश-बख़्त मुख़लिस सहाबी ऐसे थे कि जो जंग-ए-उहद में शामिल नहीं हुए लेकिन अब उनको साथ जाने की इजाज़त मर्हमत हुई थी और वह हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो थे। इब्न-ए-असहाक और इब्न-ए-उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन किया है कि जाबिर बिन अब्दुल्लाह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुनादी ने यह ऐलान किया है कि हमारे साथ वही निकले जो पिछले रोज़ लड़ाई अर्थात जंग-ए-उहद में मौजूद था और मैं लड़ाई में हाज़िर होने का ख़ाहिशमंद था लेकिन मेरे पिता ने मुझे मेरी सात बहनों के लिए पीछे छोड़ दिया और एक क़ौल के मुताबिक़ उनकी बहनों की संख्या 9 थी। बहरहाल कहते हैं मेरे पिता ने कहा कि हे बेटे! मेरे और तेरे लिए मुनासिब नहीं है कि हम इन औरतों को बग़ैर किसी मर्द के छोड़ दें। मुझे उनका डर है ये कमज़ोर महिलाएं हैं। और मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जिहाद मैं तुझे ख़ुद पर तर्जीह नहीं दे सकता। यह भी है कि हम औरतों को भी पीछे अकेला नहीं छोड़ सकते और जिहाद में मैं ख़ुद भी जाना चाहता हूँ और मेरी ख़ाहिश यही है कि मैं जाऊं और तुम न जाओ तू तो अपनी बहनों के पास पीछे रह जा और मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जिहाद पर जाता हूँ। कहते हैं कि इसलिए मैं अपने बाप के इस हुक्म की तामील में कल जिहाद में शामिल नहीं हो सका अन्यथा मेरा भी पूरा इरादा था। इसलिए हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हो के इशक़-ओ-मुहब्बत में डूबी हुई यह बात सुनकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको साथ जाने की आज्ञा मर्हमत फरमाई

और इस पर हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़ख़्रिया तौर पर वर्णन किया करते थे कि मेरे इलावा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ कोई ऐसा आदमी नहीं गया जो पिछले रोज़ के जिहाद में शरीक नहीं हुआ हो और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कई लोगों ने साथ जाने की आज्ञा तलब की थी जो पिछले रोज़ जिहाद में शरीक नहीं हुए थे लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इंकार कर दिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस हालत में रवाना हुए कि पवित्र मुख घायल था। पेशानी मुबारक ज़ख़्मी थी। पवित्र दांत टूटा हुआ था। नीचे का होंट और बाअज़ रिवायात के मुताबिक़ दोनों होंट अंदर की जानिब से ज़ख़्मी थे। दाहिना कंधा इब्ने कय्यमा की तलवार की मार से ज़ख़्मी था और दोनों घुटने भी ज़ख़्मी थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पहले मस्जिद में तशरीफ़ ले गए। वहां दो रकातें अदा कीं। लोग जमा हो चुके थे। फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपना घोड़ा सक़िब मस्जिद के दरवाज़े पर मंगवाया। इस ग़ज़्वा में केवल आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास ही घोड़ा था। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रवाना हुए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़िरह और ख़ुद पहन रखा था और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की केवल आँखें ही नज़र आ रही थीं। इसी दौरान आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हज़रत तल्हा बिन उबेयदुल्लाह मिले। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे फ़रमाया। तल्हा! तुम्हारे हथियार कहाँ हैं? हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया कि क़रीब ही हैं। यह कह कर वह जल्दी सौ गए और अपने हथियार उठा लाए हालाँकि उस वक़्त तल्हा के केवल सीने पर ही उहद की जंग के नौ ज़ख़्म थे। उनके जिस्म पर कुल मिला कर सत्तर से ऊपर घाव थे।

हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि मैं अपने ज़ख़्मों की निसबत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़ख़्मों के मुताल्लिक़ ज़्यादा फ़िक्रमंद था।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे पास तशरीफ़ लाए और पूछने लगे कि तुम दुश्मन को कहाँ देखते हो? अर्थात तुम्हारा क्या अंदाज़ा है कि अबू-सुफ़ियान और उसका लश्कर किस जगह पर होगा। मैं ने अर्ज़ किया कि नशीबी इलाक़े में। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यही मेरा ख़्याल है। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जहां तक उनका अर्थात क़ुरैश का ताल्लुक़ है उनको हमारे साथ आइन्दा कभी इस तरह का मामला करने का अवसर नहीं मिल सकता यहां तक कि अल्लाह तआला मक्का को हमारे हाथों से फ़तह कर देगा।

एक रिवायत के मुताबिक़ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया हे इब्न-ए-ख़त्ताब आइन्दा कभी क़ुरैश हमारे साथ ऐसा मुआमला नहीं कर पाएँगे यहां तक कि हम हज्र-ए-असवद को चुंबन देंगे।

साबित बिन साअलाबा ख़ज़रजी हमराउल् असद तक आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को रास्ते की राहनुमाई करने वाले थे। एक रिवायत के मुताबिक़ साबित बिन ज़हाक राहनुमाई करने वाले थे। सबलुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 308-309 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)(अल् सीरतुल हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 350-351 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत ये दो रिवायतें हैं।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस अवसर पर दो अस्हाब को आगे रवाना फ़रमायाता कि लें।

यह तफ़सील इस तरह है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़बीला असलम की एक शाख़ बनू सहमिया से सुफ़ियान के दो बेटों सुलैत और नुमान को लोगों की इत्तिला लेने के लिए आगे भेजा और तीसरा शख़्स क़बीला असलम की एक शाख़ बनू उवैस उनके साथ भेजा। इसका नाम नहीं वर्णन हुआ। उनमें से दो हम्राउल असद के मुक़ाम पर क़ुरैश को जा मिले। क़ुरैश बातें कर रहे थे। क़ुरैश ने इन दोनों अफ़राद को देख लिया तो उन्हें क़तल कर दिया। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने अस्हाब के साथ रवाना हुए और हम्राउल असद में पहुंच कर लश्कर का पड़ाव किया तो उनकी लाशें वहीं पड़ी हुई थीं, इन दोनों अस्हाब को एक क़ब्र में दफ़न किया। वे दोनों थे।

इस ग़ज़्वा में दो अंसारी भाईयों की इताअत का नमूना भी नज़र आता है कि किस तरह उन्होंने ज़ख़्मी हालत में पैदल सफ़र किया। तफ़सील में आता है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन सहल रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत राफ़े बिन सहल रज़ियल्लाहु अन्हो दोनों भाई जो क़बीला बनू अशहल में से थे जब वे दोनों ग़ज़्व-ए-उहद से वापस आए तो वे शदीद ज़ख़्मी थे। जंग में ज़ख़्मी हो गए और

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो ज़्यादा ज़ख़्मी थे। जब इन दोनों भाईयों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हम्राउल असद की तरफ़ जाने और इस में शमूलियत के विषय में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म के बारे में सुना तो उनमें से एक ने दूसरे से कहा ख़ुदा की कसम! यदि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ ग़ज़वा में शिरकत नहीं कर सके तो यह एक बड़ी महरूमी होगी। यह था उनका ईमान। फिर कहने लगे ख़ुदा की कसम हमारे पास कोई सवारी भी नहीं है जिस पर हम सवार हों और न ही हम जानते हैं कि किस तरह ये काम करें। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि आओ मेरे साथ हम पैदल चलते हैं। हज़रत राफ़े रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि अल्लाह की क़सम! मुझे तो ज़ख़्मों की वजह से चलने की सकत भी नहीं है। यह हालत थी। आप रज़ियल्लाहु अन्हु के भाई ने कहा कि आओ हम आहिस्ता-आहिस्ता चलते हैं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ चलते हैं। इसलिए वे दोनों गिरते पड़ते चलने लगे। हज़रत राफ़े रज़ियल्लाहु अन्हो ने कभी कमज़ोरी महसूस की तो हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत राफ़े रज़ियल्लाहु अन्हो को अपनी पीठ पर उठा लिया, कभी वे पैदल चलने लगे। ऐसी हालत थी कि दोनों ही ज़ख़्मी थे लेकिन जो बेहतर थे वे ज़्यादा ज़ख़्मी को अपनी पीठ पर उठा लेते थे। लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ चलते रहे। कमज़ोरी की वजह से बाअज़ दफ़ा ऐसी हालत होती थी कि वे हरकत भी नहीं कर सकते थे यहां तक कि इशा के वक़्त वे दोनों रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो गए। सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो उस वक़्त आग जला रहे थे। अर्थात उन्होंने उस वक़्त डेरा लगा लिया था। आप दोनों को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश किया गया। उस रात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पहरे पर हज़रत उबाद बिन बशन निर्धारित थे। जब ये पहुंचे तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन दोनों से पूछा कि किस चीज़ ने तुम्हें रोके रखा था। इन दोनों ने इस का कारण बताया कि क्या वजह हो गई। अपनी तफ़सील बता दी। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन दोनों को दुआ-ए-ख़ैर देते हुए फ़रमाया कि अगर तुम दोनों को लंबी उम्र नसीब हुई तो तुम देखोगे कि तुम लोगों को घोड़े और ख़च्चर और ऊंट बतौर सवारियों के नसीब होंगे। अभी तो तुम गिरते पड़ते पैदल आए हो लेकिन लंबी ज़िंदगी पाओगे तो ये सब कुछ देखोगे। ये सब सवारियां तुम्हें मयस्सर आजाऐंगी लेकिन साथ यह भी फ़रमाया लेकिन वे तुम्हारे लिए तुम दोनों के इस सफ़र से बेहतर नहीं होंगी जो उस वक़्त तुम करके आए हो, जो तुमने पैदल गिरते पड़ते किया है। अर्थात तुम्हारे इस सफ़र का सवाब तो इतना है कि इस ज़माने की जो बेहतरीन नेअमतें हैं उनसे भी ज़्यादा है। यह भी कहा जाता है कि यह वाक़िया हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो और मूनिस रज़ियल्लाहु अन्हो, फ़ज़ालह के बेटों के साथ पेश आया था। इसलिए मुम्किन है कि यह वाक़िया दोनों के साथ ही पेश हो।

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 310 ग़ज़वा हम्राउल असद, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

फिर आता है मुस्लमानों का ज़ाद-ए-राह और हज़रत साद बिन उबादः रज़ियल्लाहु अन्हो की सख़ावत का। इस की तफ़सील यूं वर्णन होती है कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि ग़ज़वा हम्राउल असद में हमारा आम ज़ाद-ए-राह खजूरें थीं, खजूरें ही खाया करते थे। हज़रत साद बिन ऊबादह रज़ियल्लाहु अन्हो तीस ऊंट खजूरें लाए जो हम्राउल असद मुक़ाम तक हमारे लिए काफी रहीं। रावी ने यह भी लिखा है कि वे ऊंट लेकर आए थे जो किसी दिन दो या किसी दिन तीन करके ज़बह किए जाते थे। बाअज़ दफ़ा ख़जूरों के साथ ऊंट का गोश्त, ऊंट भी खाए जाते थे।

क्या हिक्मत थी? क्या strategy थी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जंग की और किस तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दुश्मन को मरऊब करना चाहते थे।

इस बारे में तफ़सील में लिखा है कि दुश्मन के दिल में रोब डालने और उसे ख़ौफ़ज़दा करने का एक तरीक़ा यह था कि रात के वक़्त कसरत से आग के अलाओ रोशन किए जाते ताकि इस से लश्कर की कसरत ज़ाहिर हो और दुश्मन ख़ायफ़ हो। इसलिए आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जहां भी रात को पड़ाव फ़रमाते तो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को इरशाद फ़रमाते कि फैल कर अलग अलग-आग जलाएं। इसलिए हर शख़्स एक एक आग जलाता। पाँच सौ जगहों पर आग जलाई गई यहां तक कि वह दूर से नज़र आती थी। मुस्लमानों के लश्कर और इस आग का वर्णन दूर तक फैल गया। इस की वजह से अल्लाह ने दुश्मन को भयभीत किया।

एक वर्णन यह भी है कि माबअद ख़ज़ाई की इस दौरान में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुलाकात की हुई और फिर वे अबूसुफ़ियान के पास भी गया और फिर क़ुरैश को लश्कर को इस्लाम से उसने डराया। इस की तफ़सील यूं वर्णन हुई है कि माअब्द बिन अबू माअबद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मिला। यह अभी तक मुशरिक था। बाअज़ सीरत निगारों ने इस अवसर पर उसके इस्लाम क़बूल करने का भी वर्णन किया है लेकिन अक्सर ने यह कहा है कि इस वक़्त इस्लाम क़बूल नहीं किया था अल् बत्ता बाद में यह इस्लाम ले आए थे।

बनू ख़ुज़ा के अहल-ए-ईमान और मुशरिक आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ इख़्लास का इज़्हार करते थे। इसके जो दूसरे क़बीले के लोग थे उनमें से बहुत से ईमान लाए हुए थे। इख़्लास का इज़्हार भी था उनमें। इन लोगों का आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ वादा था कि वह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कुछ नहीं छुपाएँगे। माबद ने कहा हे मुहम्मद सल्लल्लाहो वसल्लम! आपको और आपके सहाबा कराम को जो तकालीफ़ पहुंची हैं यह हम पर गिरां गुज़रा है। हमारी तो यही ख़्वाहश है कि अल्लाह तआला आपका मर्तबा बुलंद करे और आपको हर तकलीफ़ से महफ़ूज़ रखे। इस इज़्हार-ए-हमदर्दी पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने माबद से फ़रमाया कि अबूसुफ़ियान की हौसला शिकनी करो। तुम जा रहे हो, आगे सफ़र में इस को मिलो तो इस को ज़रा डराओ। लेकिन किस तरह? अपनी यह हिक्मत-ए-अमली उन्होंने ख़ुद बनानी थी। फिर माबद वहां से मक्का की तरफ़ रवाना हो गया और आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम्राउल असद में ही तशरीफ़ फ़र्मा थे। वह रोहा के मुक़ाम पर अबूसुफ़ियान और इसके साथियों से मिला। रोहा मद दीना से तक़रीबन चालीस मील की मुसाफ़त पर एक मुक़ाम है। इस वक़्त लश्कर क़ुरैश ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ वापस हमला करने पर इत्तिफ़ाक़ कर लिया था और उन्होंने कहा हमने उनके बेहतरीन और सरदार-ओ-क़ायद लोगों को क़तल किया है हालाँकि ऐसी भी बात नहीं थी। हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु समेत चंद एक नाम हो सकते हैं अन्यथा नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम समेत हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उम्र रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ दर्जनों नामवर सरदार और क़ायद ख़ुदा के फ़ज़ल से जंग-ए-उहद में महफ़ूज़ और मामून रहे थे। फिर कहने लगे कि फिर हम उनकी बेख़कुनी से पहले वापस चल पड़े। अब हम उनके बाक़ी लोगों पर पलट कर उन्हें हलाक करेंगे और उनसे फ़ारिग़ हो जाऐंगे। जब अबूसुफ़ियान ने माबद को देखा तो कहा यह माबद है इस के पास कोई ख़बर होगी। उसने माबद! पीछे के हालात कैसे हैं? उसने अबूसुफ़ियान को डराने के लिए कहा कि मैं ने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथियों को इस हालत में छोड़ा है कि वे इतना लश्कर-ए-जर्रार लेकर तुम्हारे पीछे निकल आए हैं कि मैं ने आज तक इतना बड़ा लश्कर नहीं देखा। ओस और ख़ज़रज के जो लोग कल पीछे रह गए थे वे भी उनके साथ आ मिले हैं। अपने पास से उसने कहानी भी कुछ बना दी। और उन्होंने अहद किया है कि वे वापस नहीं जाऐंगे यहां तक कि तुम्हें पा लें और तुमसे बदला ले लें। वे अपनी क़ौम की वजह से सख़्त गुस्सा में हैं। अपने इस फ़ेअल पर सख़्त नादिम हैं कि पहले ये शामिल नहीं हुए। उनमें तुम्हारे ख़िलाफ़ ऐसा गुस्सा है कि मैं ने इतना शदीद गुस्सा कभी नहीं देखा। अबूसुफ़ियान ने कहा तेरे लिए हलाकत हो, तो क्या कह रहा है इस ने कहा लगता है कि तू यहां से नहीं चलेगा यहां तक कि तू घोड़ों की पेशानियां न देख ले। यह भी उनका मुहावरा है कि हलाकत न हो जाए। अबूसुफ़ियान कहने लगा ख़ुदा की कसम हमने तो उन पर ग़लबा पा कर उनको जड़ों से उखेड़ देने पर इत्तिफ़ाक़ कर लिया है। माबद ने कहा कि मैं फिर तुझे इस फ़ेअल से रोकता हूँ। जो हैबतनाक मंज़र मैं ने देखा है उसने मुझे अशआर कहने पर मजबूर कर दिया है। अबूसुफ़ियान ने कहा वह कौन से अशआर हैं। माबद ने ये अशआर कहे :

كَادَتْ تُهَدُّ مِنَ الْاَصْوَاتِ رَاحِلَتِي
اِذْ سَالَتِ الْاَرْضُ بِالْجُرْدِ الْاَبَابِيلِ
تَرْدِي بِاُسْدٍ كِرَامٍ لَا تَنَابِلَةٍ

عِنْدَ اللِّقَاءِ وَلَا مِيلٍ مَعَازِيلِ
فَظَلْتُ عَدْوًا اَظُنُّ الْاَرْضَ مَائِلَةً
لَمَّا سَمَوْا بِرَئِيسٍ غَيْرِ مَخْذُولِ
فَقُلْتُ وَيْلَ ابْنِ حَرْبٍ مِنْ لِقَائِكُمْ
اِذَا تَغَطْمَطَتِ الْبَطْحَاءُ بِالْجِيلِ
اِنِّي نَذِيرٌ لِاَهْلِ الْبَسْلِ ضَاحِيَةً
لِكُلِّ ذِي اِرْبَةٍ مِنْهُمْ وَ مَعْقُولِ
مِنْ جَيْشِ اَحْمَدَ لَا وَخْشٍ تَنَابِلَةٍ
وَلَيْسَ يُوصَفُ مَا اَنْذَرْتُ بِالْقِيلِ

कि जब ज़मीन पर आला नसल घोड़ों के झुण्ड दर झुण्ड चलने लगे तो उनके खुरों की आवाज़ से क़रीब था कि मेरी ऊंटनी घबराहट से डगमगाने लगे और गिर जाए। अब वहां केवल एक घोड़ा था लेकिन उसने भी अपने शेरों में ऐसा अतिशयोक्ति से नक़्शा खींचा कि जिसने उन लोगों को डरा दिया। फिर कहते हैं कि वे घोड़े ऐसे उम्दा शेर जैसे बहादुर जंगजूओं को उठाए हुए थे जो न तो छोटा कद हैं और न ही लड़ाई में निहत्ते और न शह-सवारी में अनाड़ी हैं। अर्थात जंग में ख़ूब माहिर और तीर-ओ-तलवार से मुसल्लह और मैदान शह-सवारी में यकता-ए--ज़माना हैं। इस पर मैं ख़बर देने के लिए तेज़ी से भागा और मुझे यूं लग रहा था जैसे ज़मीन झुकती जा रही है इन घोड़ों के आगे जिन पर वह अज़ीमुश्शान जरनैल बुलंद था जो तन्हा नहीं अर्थात लाओ लश्कर समेत बढ़ता चला आ रहा है और मैं ने अपने जी में कहा। हे लश्कर वालो! तुमसे जंग करने में इबन हर्ब अर्थात अबूसुफ़ियान की हलाकत है। जब मैदान-ए-जंग लश्कर की आवाज़ से गूंज उट्ठेगा। मैं अहल-ए-क़ुरैश में से हर दाना और माक़ूल शख़्स को अहमद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस अज़ीम लश्कर से मुतनब्बा करता हूँ जिस की फ़ौज निकम्मे और पस्त लोगों पर मुश्तमिल नहीं है। इस लश्कर की दहश्त को जिससे मैं तुम्हें आगाह कर रहा हूँ शब्द में वर्णन नहीं किया सकता।

माबद की इस आसाब-ए-शिकन गुफ़्तगु और इस के इन अशआर के साथ--साथ सफ़वान बिन अमय की गुफ़्तगु से अबू सुफ़ियान और इसके साथियों के हौसले पस्त हो गए और उन पर घबराहट और रोब तारी हो गया और अबूसुफ़ियान को आफ़ियत इसी में नज़र आई कि वह जिस क़दर जल्दी हो सके अपने लश्कर को लेकर मक्का वापस पहुंच जाए।

इस बारे में रिसर्च सेल की तरफ़ से एक नोट भी है कि नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का माबद से यह फ़रमाना कि अबूसुफ़ियान की हौसला शिकनी करो। सीरत की कुछ कुतुब ने यह वर्णन किया है और कुछ ने नहीं वर्णन किया। कहते हैं कि एक संभवना है कि जंगी हिक्मत-ए-अमली के तौर पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने माबद से ऐसी बात की हो और यह भी मुम्किन है और ज़्यादा क़रीन-ए-क़ियास है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो उसे कुछ नहीं फ़रमाया लेकिन वह चूँकि मुस्लमानों से हमदर्दी रखता था इसलिए अल्लाह तआला ने इस के दिल में यह डाला हो और उसने ख़ुद से अबूसुफ़ियान से ये सारी बात की हो।

बहरहाल यह तो उनका नोट है लेकिन माबद ने जो कुछ भी कहा यह उनकी अपनी सोच थी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बड़े वाज़ेह तौर पर किसी किस्म की कोई ग़लतबयानी का नहीं कहा था।

लेकिन जिस तरह उन्होंने डराया, जो नक़्शा खींचा इस से बहरहाल काफ़िर डर गए। इसी दौरान कि मुशरेकीन का लश्कर मक्का वापसी की तैयारी कर रहा था कि अबूसुफ़ियान के पास से अब्दुल कैस का एक कारवां गुज़रा जिसने दरअसल उसी जगह पड़ाव किया हुआ था। उसने पूछा कहाँ जा रहे हो? उन्होंने कहा कि हम मदीना जा रहे हैं। इस पर अबू सुफ़ियान ने केवल प्रोपेगंडे की ख़ातिर अपनी तरफ़ से एक नफ़सियाती हमला लेकिन नाकाम हमला था यह करना चाहा और वह इस तरह कि उसने कहा कि क्या तुम मेरी तरफ़ से मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पैग़ाम दोगे। मैं तुम्हें उक्काज़ के मेले में किशमिश से भरे हुए ऊंट दूँगा। उन्होंने कहा कि हाँ। अबूसुफ़ियान ने कहा कि जब तुम मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मिलो तो उन्हें कहना कि हमने इत्तिफ़ाक़ कर लिया है कि हम उनकी तरफ़ और उनके अस्हाब की तरफ़ आ रहे हैं ता कि उनके बक़ीया लोगों को जड़ से उखेड़ फैंकें। हम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लोगों के पीछा करने में हैं और यह कह कर अबूसुफ़ियान मक्का की जानिब चल पड़ा। यह कारवां आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हम्राउल असद के स्थान पर मिला। अबूसुफ़ियान और उसके साथियों ने जो आपके विषय में कहा था अब्दुल कैस ने वह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बताया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह सुनकर फ़रमाया। حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْل अर्थात हमारे लिए अल्लाह काफ़ी है और वह क्या ही अच्छा है।

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद, भाग 4 पृष्ठ 310-311 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

(अल् रहीकुल् मखतूम पृष्ठ 253 प्रकाशन दारुल वफ़ा मिस्र 2010 ई.)

(शरह जरक़ानी भाग 2 पृष्ठ 264 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

बहरहाल हम्राउल असद में कुछ क़ियाम हुआ और इसके बाद इस्लामी लश्कर की वापसी भी हो गई क्योंकि वह काफ़िर तो वहां से रवाना हो गए थे। इस की तफ़सील में लिखा है कि :

माबद ख़ुज़ाई की बात सुनकर अबूसुफ़ियान ने मदीना की तरफ़ पेशक़दमी करने का इरादा छोड़ दिया और मक्का की तरफ़ रवाना हो गया।

तो मअबद ने एक शख़्स के द्वारा अबूसुफ़ियान की रवानगी की ख़बर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भेज दी। आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सोमवार, मंगल और बुध के रोज़ वहां क़ियाम फ़रमाया और फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना वापस तशरीफ़ ले गए और बलाज़री ने वर्णन किया है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस सफ़र के लिए मदीना से पाँच दिन बाहर रहे।

(अमताउल् असमा, भाग 1 पृष्ठ 180-181 ख़बर माबद अल् ख़ज़ाई वल् इंसेराफ़ अल् मुशरेक़ीन। दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 1999 ई.)

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद, भाग 4 पृष्ठ 312 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

एक रिवायत में है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जुमा के दिन मदीना वापस तशरीफ़ लाए और पाँच दिन मदीना से बाहर रहे।

(किताबुल् मग़ाज़ी भाग 1 पृष्ठ 334 आलेमुल कुतुब बेरूत 1984 ई.)

हज़रत अबू उबेदा कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना की तरफ़ वापस आने से पहले माविया बिन मुगेरा को गिरफ़्तार कर रखा था। मुआविया बिन मुगेरा, अब्दुल मालिक बिन मरवान का नाना था। मुआविया के इलावा अबू अज़्ज़ा जुमेही को भी गिरफ़्तार कर रखा था। मुआविया बिन मुगेरा के बारे में रिवायत है कि हज़रत ज़ैद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुआविया को हम्राउल असद से वापसी पर क़तल किया जिसकी वजह यह थी कि मुआविया छुप कर मदीना में रह रहा था और मदीना के हालात की ख़बर मुख़ालेफ़ीन को दिया करता था। जब पकड़ा गया तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो की पनाह में चला गया। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इसके लिए अमान मांगी। आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अमान देते हुए फ़रमाया कि ये तीन रोज़ के अंदर यहां से चला जाए। अगर तीन रोज़ के बाद देखा गया तो क़तल कर दिया जाएगा। लेकिन ये तीन रोज़ के बाद भी वहीं ठहरा रहा और छिपा रहा तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन दोनों अर्थात हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हो को फ़रमाया कि तुम अमुक जगह उसे छिपा हुआ पाओगे। इसलिए इन दोनों ने उसे वहीं पाया और उसे क़तल कर दिया।

(अल् सीरतुल नब्वी ले इब्ने हशशाम, पृष्ठ 548 दारुल कुतुब इल्मिया 2001 ई.)

फिर लिखा है कि यहीं हमराउल असद के स्थान पर आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुशरिकों के कवि अबू अज़्ज़ा को गिरफ़्तार किया था। यह वह अबू अज़्ज़ा है जो ग़ज़्वा-ए-बदर के वक़्त मुस्लमानों के हाथ गिरफ़्तार हुआ था और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उसने अपनी ग़ुर्बत और अपनी बेटियों का वास्ता दिया कि मैं परिवार वाला हूँ। मेरी बेटियों का कोई सरपरस्त नहीं। मुझ पर रहम फ़रमाएं। जिस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसकी बेटियों की वजह से उसको बग़ैर फ़िद्या लिए एहसान के तौर पर छोड़ दिया था और उससे यह अह्द लिया था कि भविष्य में वह न तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ जंग को आएगा न आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ लश्कर इकट्ठा करेगा और न आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ किसी को उकसाएगा परंतु उसने अपना अह्द तोड़ दिया और जंग-

-ए-उहद में क़ुरैश के साथ वापस आया। यह लोगों को जोश दिलाता था और अपने शेरों के माध्यम से उन्हें भड़काता था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ जंग करें। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुआ फ़रमाई कि यह शख़्स इस दफ़ा बच कर न जाने पाए। इसलिए यह फिर गिरफ़्तार हुआ। एक कथन के मुताबिक़ जंग-ए-उहद के बाद जब मुशरिकीन वापसी में हम्राउल असद के मुक़ाम पर ठहरे तो यह अबू अज़ा को सोता हुआ छोड़ गए। ये दिन चढ़े तक ग़ाफ़िल पड़ा सोता रहा। इस को गिरफ़्तार करने वाले शख़्स हज़रत आसिम बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो थे। इस ग़ज़वा में यही तन्हा मुशरिक था जो गिरफ़्तार हुआ। एक क़ौल है कि इस को गिरफ़्तार करने वाले हज़रत उमेर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो थे। गिरफ़्तारी के बाद अबू अज़्ज़ह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने लाया गया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखकर उसने कहा कि हे मुहम्मद (सल्लल्लाहो वसल्लम! मुझे छोड़ दीजीए, मुझ पर एहसान फ़रमईए और मेरी बेटियों की ख़ातिर मुझे रिहा कर दीजीए। मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने अह्द करता हूँ कि आइन्दा कभी इस किस्म की हरकत नहीं करूँगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : नहीं। ख़ुदा की क़सम अब तेरे चेहरे को मक्का देखना नसीब नहीं होगा। एक रिवायत में है कि अब तू अपनी इस दाढ़ी के साथ हज्र-ए-अस्वद के पास बैठ कर यह नहीं कह सकेगा कि मैं मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को धोखा दे आया। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ मुतवज्जा हो कर हुक्म दिया कि इस की गर्दन काट दो। एक रिवायत है कि यह हुक्म आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत आसिम बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो को दिया था और फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

मोमिन एक सुराख़ से दो मर्तबा नहीं डसा जा सकता।

(अल् सीतुल हल् बिया भाग 2 पृष्ठ 352 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

(सीरतुल हल् बिया उर्दू भाग 2 अंतिम पृष्ठ 236-237 दारुल इशाअत कराची 2009 ई.)

बाक़ी इंशा अल्लाह आइन्दा वर्णन होगा दुनिया के हालात के लिए दुआएं जारी रखें। अल्लाह तआला हर अहमदी को हर किस्म के शर से महफ़ूज़ रखे।

इस वक़्त में एक जनाज़ा भी पढ़ाऊंगा श्रीमान फ़राज़ अहमद ताहिर साहिब का है जो आस्ट्रेलिया में पिछले दिनों शहीद हुए

उनके वाक़िया के बारे में लिखा है कि आस्ट्रेलिया के शहर सिडनी के एक मशहूर इलाक़ा बंडाई (Bondi) के एक शॉपिंग सैंटर में एक ऑस्ट्रेलियन शख़्स ने उन्हें चाक़ू से वार कर के शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

मरहूम शॉपिंग सैंटर में बतौर सैक्योरिटी गार्ड काम कर रहे थे। मरहूम की उम्र तीस बरस की थी और ग़ैर शादी शूदा थे। इस हमले में बारह लोग ज़ख़्मी हुए और छः लोगों की वफ़ात हुई। वफ़ात पाने वाले छः अफ़राद में से पाँच महिलाएं थीं।

फ़राज़ अहमद ताहिर साहिब मरहूम का ताल्लुक़ रब्वाह से था। 2018 ई. में पाकिस्तान से श्रीलंका चले गए। चार साल वहां रहे। फिर पिछले साल यू एन एच सी आर (UNHCR) की वसातत से आस्ट्रेलिया आए। पिछले माह मरहूम ने अपना सैक्योरिटी लाईसैंस बनवाया था और जिस दिन मरहूम की वफ़ात हुई इस रोज़ लिखा हुआ है कि शॉपिंग सैंटर में मरहूम की दिन के वक़्त पहली जॉब थी। रात को डयूटी देते थे लेकिन दिन के वक़्त यह पहली थी।

तफ़सीलात के मुताबिक़ जब श्रीमान फ़राज़ अहमद साहिब ताहिर मरहूम ने लोगों को बैचेनी की हालत में इधर उधर भागते देखा तो हमला-आवर को रोकने के लिए आगे बढ़े जिस पर हमला-आवर ने मरहूम पर वार किया जिस से वह बच नहीं सके। इस हमला में वफ़ात पाने वाले आप पहले फ़र्द थे। मरहूम के ख़ानदान में अहमदियत उनके पड़दादा श्रीमान मियां अहमद साहिब के माध्यम से आई जो ज़िला शाहपुर के रहने वाले थे। मरहूम के दादा श्रीमान सूफ़ी अहमद यार साहिब को एक लंबे अरसा से जमाती ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिल रही है। उनके वालिद बशीर साहिब 2005 ई. में जबकि वालिदा रज़ीया बेगम 2014 ई. में वफ़ात पा गई थीं। मरहूम के पीछे रहने वालों में तीन भाई, दो बहनें और दादा सूफ़ी अहमद यार साहिब शामिल हैं।

उनके बारे में मज़ीद तफ़सीलात में यह भी आया है कि आस्ट्रेलिया के वज़ीर-ए-आज़म और न्यू साउथ वेल्ज़ के प्रीमीयर ने फ़राज़ अहमद ताहिर साहिब मरहूम की बहादुरी और क़ुर्बानी को ख़िराज-ए-तहसीन पेश किया। इसी तरह आस्ट्रेलिया में मुक़ीम पाकिस्तान के हाई कमिशनर साहिब ने भी फ़राज़ अहमद ताहिर मरहूम की बहादुरी को ख़िराज-ए-तहसीन पेश करते हुए अफ़सोस का इज़हार किया और हर तरह के सहयोग का यक़ीन दिलाया। मरहूम और इस वाक़िया के बारे में मीडीया में एक सौ बीस से अधिक न्यूज़ शाय हुईं और मज़ीद हो रही हैं। आज उनका वहां जनाज़ा था उस पर भी वहां के प्रीमीयर, प्राइम मिनिस्टर इत्यादि आए हुए थे उन्होंने दुबारा उनको ख़िराज-ए-तहसीन पेश किया। सोशल मीडीया में फ़राज़ ताहिर साहिब मरहूम की बहादुरी और क़ुर्बानी को निहायत ख़ूबसूरत शब्द में वर्णन किया जा रहा है और अक्सर लोग उन्हें "हीरो" कह कर पुकार रहे हैं।

उनकी यह क़ुर्बानी ज़ाहिर करती है कि वह पाकिस्तान से मौत के डर से नहीं आए थे बल्कि जो मज़हबी पाबंदियां अहमदियों पर लगाई जाती हैं उनसे तंग आकर मुल्क छोड़ा था जहां उन्हें अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम लेने से रोका है।

सदर ख़ुद्दामुल् अहमदिया अदनान क़ादिर कहते हैं कि 21अप्रैल इतवार के दिन ऑस्ट्रेलियन गर्वनमैंट की तरफ़ से एक शॉपिंग माल के क़रीब एक प्रोग्राम मुनाक़िद किया गया जिसका उद्देश्य इन समस्त लोगों को ख़िराज-ए-अक़ीदत पेश करना था जो इस वाक़िया में वफ़ात पा गए हैं। इस प्रोग्राम में वज़ीर-ए-आज़म आस्ट्रेलिया, प्रीमीयर न्यू साउथ वेल्ज़, अप्पोज़ीशन लीडर, मैंबर आफ़ पार्लीमैंटस, लोकल और दूसरी कौंसल के मेयरज़ और पुलिस और आर्मी और नेवी के आला आफ़सरान, मीडीया और ज़िंदगी के दूसरे विभागों से ताल्लुक़ रखने वाले आला आफ़सरान ने बड़ी संख्या में शिरकत थी। इस अवसर पर जमात के मैंबरान को भी इस प्रोग्राम में बुलाया था।

उनके बड़े भाई मुदस्सर बशीर कहते हैं मरहूम बचपन से ही बहुत मेहनती, हँसमुख और निडर तिफ़्ल था। मरहूम की उम्र ग्यारह साल थी जब हमारे वालिद साहिब का इंतेक़ाल हो गया तो कहते हैं कि हमारे बड़े भाई मुज़फ़्फ़र अहमद साहिब ने हमें एक बाप की तरह पाला। मरहूम अपनी तालीम के साथ-साथ भाई के कारोबार में मदद देता था। मरहूम बहुत मेहनती और अपने बहन भाईयों से बहुत प्यार करने वाला था। नरम मिज़ाज और तबीयत में मज़ाह था। कभी बहन भाईयों की किसी बात पर नाराज़ नहीं हुआ। मरहूम जमाअती कामों में भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेता था। जितना अरसा पाकिस्तान में रहा और फिर श्रीलंका और इसके बाद आस्ट्रेलिया जहां भी रहा जमाअती कामों में, डयूटियों में सरगर्म रहा। ख़िलाफ़त के साथ बहुत इख़लास और वफ़ा और प्यार का ताल्लुक़ था। यही उसको था, यह उनकी एक ख़ाहिश थी कि नेशनेल्टी मिलेगी तो पहले जाकर में लंदन ख़लीफ़तुल मसीह से मिलूँगा। उनके छोटे भाई शीराज़ अहमद कहते हैं कि क़ुरआन-ए-करीम की निहायत ख़ुश-अल्हानी से तिलावत किया करता था और नमाज़ों की बड़ी पाबंदी थी।

मुरब्बी कामरान मुबश्शिर साहिब कहते हैं कि मैं ने मरहूम में एक ख़ूबी देखी कि जमाती बुज़ुर्गों और मुरब्बियान की बहुत इज़्ज़त करते थे और उनकी तरफ़ से कोई भी हिदायत दी जाती तो इंकार नहीं करते थे। अगर उनको उनकी किसी ग़लती वग़ैरा की तरफ़ तवज्जा दिलाई जाती तो इसका हरगिज़ बुरा नहीं मनाते थे बल्कि आजिज़ी से ख़ामोशी इख़तेयार करते हुए अपनी ग़लती का एतराफ़ करते और अपनी इस्लाह करते थे।

उनके एक दोस्त अहमद इबराहीम कहते हैं कि मरहूम दीन और ख़िलाफ़त के साथ बेमिसाल मुहब्बत करने वाले वजूद थे। जमात के ओहदेदारों की इज़्ज़त करने वाले, नमाज़ों के पाबंद थे। मेरा उनके साथ एक भाई और दोस्त का रिश्ता बन गया था। कभी किसी बात पर मैं डाँट भी देता तो आँखें झुका कर सुन लेते और कहते कि आइन्दा शिकायत का अवसर नहीं दूँगा। बहुत हँसमुख, बहुत मुहब्बत करने वाला था।

बर्ज़बिन (Brisbane) के सदर जमात कहते हैं कि पिछले माह मार्च में हफ़्ते के लिए बर्ज़ बिन आए और आने की वजह अपने दोस्तों और अज़ीज़ों से मुलाक़ात बताई और साथ यह कहा कि अगर किसी के दिल में कोई नाराज़गी है या शिकवा है तो मैं माफ़ी मांग कर सुलह करने आया हूँ। बार-बार सबसे माफ़ी मांगते रहे। ऐसा लगता था कि ग़ालिबन सबको ख़ुदा-हाफ़िज़ कहने आए हैं।

उनके एक दोस्त शजर अहमद कहते हैं एक मेहनती, निडर और फ़र्ज़शनास इन्सान थे। मरहूम के साथ ज़ख़्मी होने वाले दूसरे सैक्योरिटी गार्ड ने बताया कि जैसे ही हमला-आवर शॉपिंग सैंटर में दाख़िल हुआ और उसे देखकर लोग भागने लगे तो मरहूम ने बहादुरी का मुज़ाहरा करते हुए उसको रोकने की कोशिश की

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 30 May 2024 Issue No. 22

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

और उसके सामने जा खड़े हुए और दूसरों की हिफ़ाज़त करते हुए अपनी जान का नज़राना पेश कर दिया।

सोशल मीडीया पर भी लोग फ़राज़ ताहिर साहिब को ख़िराज-ए-तहसीन पेश कर रहे हैं। एक साहिब किरिस मरफ़ी Chris Murphy) ने अपने कमंट में लिखा कि हमला होने से क़बल मैं ने एक ख़ुश-लिबास सैक्योरिटी गार्ड फ़राज़ ताहिर को देखा जो शॉपिंग सैंटर में अपनी डयूटी पर था। वह एक हीरो था जिसने अवाम की जान बचाने के लिए अपनी जान दी।

एक ख़ातून रूबेका आइवरस (Rebecca Ivers) लिखती हैं कि फ़राज़ ताहिर जो अपने मुल्क में ज़ुलम से बचने के लिए अमन और एक बेहतर मुस्त-क़बिल के लिए आस्ट्रेलिया आए वह अपनी कम्यूनिटी में निहायत मक़बूल थे उन्होंने अवाम को बचाते हुए जान दी। मैं उनकी फ़ैमिली और कम्यूनिटी से अफ़सोस का इज़हार करती हूँ। यह एक निहायत तकलीफ़-दह हादिसा है। इस तरह के बहुत से और कमंट लोगों ने जिन्हों ने वहां देखा शॉपिंग माल में भी और जिन्होंने ख़बर पढ़ी उन्होंने भी डाले हैं।

अज़ीज़म हसूर अहमद मुतअल्लिम जामिआ अहमदिया रब्वाह हैं कहते हैं कि फ़राज़ ताहिर मेरा ताया ज़ाद भाई था। अच्छी शख़्सियत का मालिक था। पांचों वक्त नमाज़ों का एहतिमाम करने वाला, दूसरों को इसकी तलक़ीन करने वाला, जब भी मिलता हंस कर मिलता। मुझे अपना छोटा भाई समझता था। कोई बात समझानी होती तो बड़े प्यार से समझाता था। हमेशा दुआ के लिए कहता कि मैं आप लोगों के लिए दुआ करूँगा आप मेरे लिए दुआ करें। कहते हैं आख़िरी दफ़ा जिस दिन उसकी शहादत हुई है उसकी काल आई और उस वक़्त आस्ट्रेलिया में सुबह के चार बजे थे। उस के बड़े भाई ने उस से कहा कि सुबह चार बजे का वक़्त है अब तुमने काम पर जाना है तुम सो जाओ। उसने कहा कि मैं ने अभी तहज्जुद अदा की है और आप सब के लिए दुआ भी की है। फिर फ़ज्र की नमाज़ पढ़ कर काम पर निकल जाऊँगा। सोने का वक़्त नहीं है। इसका सुबह की शिफ़्ट का यह पहला दिन था। पहले शाम की शिफ़्ट किया करता था। फिर यह लिखते हैं कि हमारे ख़ानदान की यह तीसरी शहादत है। पहले मेरे ख़ालू मुहम्मद नवाज़ साहिब ओरंगी टाउन में 11 सितंबर 2012 ई. को शहीद हुए। फिर उनके मामूं एजाज़ अहमद साहिब ओरंगी टाउन कराची में 4 सितंबर 2013 ई. को शहीद हुए और अब फ़राज़ अहमद साहिब की शहादत हुई।

अतः जैसा कि मैं ने पहले भी कहा था कि उन्होंने बता दिया कि मैं मौत के डर से मुल्क से नहीं निकला बल्कि मज़हबी आज़ादी के लिए आया हूँ। अल्लाह तआला मरहूम के दर्जात बुलंद फ़रमाए और सब लवाहेक़ीन को भी सब्र और हौसला आता फ़रमाए।

★ ★ ★

129वां जलसा सालाना क़ादियान
27, 28, और 29 दिसम्बर 2024 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 129वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 27,28,29 दिसंबर 2024 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है। जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन।

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

दहेज का प्रदर्शन एक ग़लत रस्म है

हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्य-दहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"शादी ब्याह के अवसर पर कुछ फ़ुज़ूल किस्म की रस्में हैं, जैसे बरी को दिखाना या वह सामान जो दूलहा वाले दूल्हन के लिए भेजते हैं इस का इज़हार, फिर जहेज़ का इज़हार, बाक़ायदा नुमाइश लगाई जाती है। इस्लाम तो केवल हक़ महर के इज़हार के साथ निकाह का ऐलान करता है, बाक़ी सब फ़ुज़ूल रस्में हैं। एक तो बरी या दहेज की नुमाइश से उन लोगों का उद्देश्य जो साहब-ए-तौफ़ीक़ हैं केवल बढ़ाई का इज़हार करना होता है कि देख लिया हमारे शरीकों ने भाई बहन या बेटा बेटी को शादी पर जो कुछ दिया था हमने देखो किस तरह इस से बढ़कर दिया है। केवल मुक़ाबला और नुमाइश है .. केवल रस्मों की वजह से,अपनी नाक ऊंचा रखने की वजह से ग़रीबों को मुश्कि-लात में, कर्ज़ों में ना गिरफ़्तार करें और दावा यह है कि हम अहमदी हैं और बैअत की दस शरायत पर पूरी तरह अमल करेंगे .. जबकि बैअत करने के बाद तो वे यह अहद कर रहा है कि संसारिक लोभ और लालच से बाज़ आजाएगा और अल्लाह और उसके रसूले सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हुकूमत मुकम्मल तौर पर अपने ऊपर तारी कर लेगा। अल्लाह और रसूले करीम हम से क्या चाहते हैं,यही कि रस्म और रिवाज और संसारिक लोभ और लालच छोड़कर मेरे अहकामात पर अमल करो।"

(शरायत-ए-बैअत और अहमदी की ज़िम्मेदारियाँ, पृष्ठ 101 से 103)

(विभाग रिश्ता नाता, नज़ारत इस्लाह इरशाद मर्कज़िया कादियान)

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

एडिशनल नाज़िर इस्लाह व इरशाद नूरुल इस्लाम के अंतर्गत नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad